छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र

ओ३म्

अंक 150, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

मास : चैत्र कृष्ण/शुक्ल पक्ष, संवत् 2074-75

मार्च 2018

धर्मवीर पं. लेखराम आर्य

भगतसिंह

चैत्र प्रतिपदा, नववर्ष विक्रमी सम्वत् 2075

आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं रामनवमीं की

समस्त आर्यजनों एवं सहृदय पाठकों को

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से

हार्दिक शुभकामनायें व बधाईयाँ

आर्यसमाज गोंड़पारा बिलासपुर में सम्पन्न वेदामृत महोत्सव की झलकियाँ

मूर्धन्य आर्यसमाजी श्री गणेशप्रसाद वर्मा के गृहग्राम जर्वे (सण्डी) बलौदाबाजार में स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती का 29वाँ पुण्य स्मरण समारोह एवं पूज्यनीया माता सुभौती वर्मा की तृतीय पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में सम्पन्न यजुर्वेद पारायण महायज्ञ दिनांक 3 से 6 फरवरी 18 तक सम्पन्न की झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष - १३, अंक ८ | ओ३म् | मास/सन् - मार्च २०१८

विक्रमी संवत् - २०७४
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११९
दयानन्दाब्द - १९४

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सन्नसन्नकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	हमारा सब कुछ भद्र हो रहा है	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	आखिर क्या है ? मानवीय समस्या का समाधान	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	कश्मीर में कैसे हो आतंक का शमन	खुर्शीद दानी	०८
४.	अनुकरणीय है राम का चरित्र	डॉ. बिजेन्द्रपाल	१०
५.	बसंतोत्सव बनाम नवशस्येष्टि	अनिल कुमार आर्य	१२
६.	उड़ियो पंख पसार	कन्हैयालाल आर्य	१४
७.	"प्रेम"	सम्पादक	१६
८.	होली : भक्तों की विजय का पर्व	डॉ. अजय आर्य	१८
९.	धर्मवीर पं. लेखराम	डॉ. भवानीलाल भारतीय	२१
१०.	प्रेमचंद का शनिश्चरी किस्सा	डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री	२४
११.	मेरे परम मित्र : आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी	महात्मा चैतन्यस्वामी	२६
१२.	होमियोपैथिक से एलर्जी का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२९
१३.	समाचार प्रवाह		३०

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

वेद
वेदामृत

हमारा सब-कुछ भद्र हो

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

भद्रो नो अग्निराहुतो, भद्रा सुभग भद्रो अध्वरः।
भद्रा उत प्रशस्तयः॥ ऋग्. ८.१९.१९

ऋषिः सौभरि काण्वः।। देवता अग्निः। छन्दः ककुब उष्णिक्।

● **(सुभग)** हे शुभ ऐश्वर्यवाले सर्वतोभद्र परमात्म्! **(आहुतः)** आहुति दिया हुआ **(अग्निः)** अग्नि **(नः)** हमारे लिये **(भद्रः)** भद्र (हो) **(रातिः)** दान **(भद्रा)** भद्र (हो)। **(अध्वरः)** यज्ञ **(भद्रः)** भद्र (हो)। **(उत)** और **(प्रशस्तयः)** प्रशस्तियाँ **(भद्राः)** भद्र (हो)।

हम चाहते है कि जीवन में हमारा सब-कुछ भद्र हो। आत्मा भद्र, भद्रतर और भद्रतम होने के लिए ही इस संसार में मानव-जन्म पाता है। हे अग्ने! हे ज्योतिर्मय परमात्मन्! तुम सुभग हो, सर्वतोभद्र हो, सर्वांग-सुन्दर हो, शुभ ऐश्वर्यवाले हो। तुम्हें आदर्श बनाकर हम भी सुभग एवं सुभद्र होना चाहते हैं। हमारी कामना है कि हमारा प्रत्येक कार्य भद्र हो। हम जो यज्ञाग्नि में सुगन्धित द्रव्यों की आहुति देते हैं वह भद्र हो, भद्र प्रकार से दी गई हो, और भद्र परिणाम प्रदान करनेवाली हो। हम जो किसी दीन-दुःखी की सहायता करने के लिए या किसी महान् लोकोपयोगी कार्य की सफलता के लिए दान देते हैं वह भी अभिमान, प्रतिफल की भावना आदि से प्रदत्त न होकर भद्र भावना से दिया गया हो और भद्र फल लाने वाला हो। हमारा अध्वर अर्थात् शतवार्षिक जीवन-यज्ञ भद्र हो। हम भद्र तरीके से जियें, भद्र गतिविधियां करें, भद्र पथ से चलें, भद्र व्रत धारण करें, भद्र व्यवहार करें, भद्र दर्शन करें, भद्र श्रवण करें, भद्र प्रवचन करें, भद्र स्पर्श करें, भद्र खान-पान करें, भद्र पुरुषार्थ करें, भद्रजनों की संगति करें, भद्र उत्सव रचायें, भद्र समाज बनायें। ब्राह्मण बनकर हमारा अध्ययन-अध्यापन, उपदेश, पौरोहित्य करना भद्र हो, क्षत्रिय बनकर हमारा राष्ट्र-रक्षा का व्रत लेना, सैन्य-संगठन करना, संग्राम करना, राष्ट्रहित में आत्म-बलिदान करना भद्र हो। वैश्य बनकर हमारा कृषि करना, व्यापार करना, पशुपालन करना, धनार्जन करना भद्र हो। शूद्र होकर हमारा सहज स्नेह से सेवा करना भद्र हो। हमारा ब्रह्मचर्य-धर्मपालन भद्र हो। सम्पूर्ण जीवन-यज्ञ को यापित करते हुए हम भद्रता की मूर्ति बने रहें। इस प्रकार यदि जीवन में हमारा सुख-कुछ भद्र होगा तो हमें भद्र प्रशस्तियां प्राप्त होंगी। सर्वत्र हमारा भद्र यशोगान होगा, हमारी भद्र कीर्ति-पताकाएँ फहरेंगी। हे प्रभु! हमारी प्रार्थना पूर्ण करो, हमें सर्वतोभद्र बना दो।

सम्पादकीय

आखिर क्या है ? मानवीय समस्या का समाधान

सम्प्रच्यवध्वमुप सम्प्रयात् । (यजुर्वेद, १५, ५३)

अर्थात् हे मानवों ! आप सब मिलजुलकर आत्मोत्कर्ष एवं सत्यप्रयोजनों के लिये प्रस्थान करो । तात्पर्य यह कि आत्मिक प्रगति और सामाजिक समृद्धि पारस्परिक स्नेह-सद्भाव एवं उदार सहकारिता पर आधारित है । मानव-जीवन में सुख-सुविधा के साधनों से लेकर शान्ति और सुव्यवस्था का समावेश हो पाना इसी साधना द्वारा संभव हो सकेगा । वर्तमान कलियुग के कलुषित वातावरण में ठीक इसके विपरीत देखा जा रहा है। व्यक्ति और समाज के सामने प्रस्तुत अनगणित समस्याओं और भयावह विभीषिकाओं के सम्बन्ध में विचारक मनीषियों ने अपने विचार प्रगट करते हुए आश्चर्य प्रगट किया है । उनका कहना है कि पदार्थ समुच्चय और प्राणी समुदाय में जब हिलमिल कर सहयोगपूर्वक रहने और एक-दूसरे के पूरक बनने की व्यवस्था है, तो फिर इस सृष्टि-व यवस्था का व्यतिरेक्त क्यों हो रहा है ?

गंभीरतापूर्वक सोचने पर पता चलता है कि नीति-नियमों की मर्यादा का उल्लंघन ही मानव के निजी एवं सामाजिक जीवन में अनेकानेक आधि-व्याधियों, क्लेश-कलहों, विक्षोभ-विद्रोहों, अभाव और अतिक्रमण का नियमित कारण बना हुआ है । असंयम शरीर का, असंतुलन मस्तिष्क का, आलस्य उत्कर्ष का, अपव्यय समृद्धि का, अनुदारता एवं अनाचार सहयोग-सद्भाव का मार्ग अवरुद्ध करता है ।

आज मानव के लिये अपनी उलझनें सुलझा सकना शक्य नहीं हो पा रहा है । और न सामूहिक समस्याओं के, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के कोई हल निकल रहे हैं । प्रायः राजनैतिक आधार पर ही हल खोजे जाते हैं । सुविधाएँ बढ़ाने या दबाने-दण्ड देने की कूटनीति ही हर समस्या के समाधान में चित्र-विचित्र तरीकों से प्रयुक्त होती रहती है । फलतः कभी-कभी तात्कालिक हल निकलते से लगते हैं, किन्तु आकर्षण या दबाव घटते ही फिर सारी परिस्थितियां ज्यों की त्यों हो जाती है ।

मानव के सामने अस्वस्थता, अशिक्षा, दरिद्रता, पारिवारिक कलह, असन्तोष आशंका, छल, आक्रमण जैसी चिन्ताएं ही सिर पर चढ़ी रहती हैं और नारकीय स्तर का विक्षुब्ध वातावरण बनाये रहती है । साहित्यकार, कलाकार, सम्पत्तिवान्, बुद्धिजीवी

और प्रतिभाशाली मानव किसी भी समाज के हृदय और मस्तिष्क माने जाते हैं। उनके हाथ की सामर्थ्य यदि विष-व्यवसाय से बच कर, अपनी क्षमता आदर्शवादी उत्कर्ष में लग सके, तो बिनी किसी शासकीय सहायता के मात्र जन-सहयोग से ही सृजन का इतना बड़ा काम हो सकता है कि समूचे समाज को और राष्ट्र को स्वरुप साधनों से भी प्रगति के उच्च शिखर पर पहुचाया जा सके। किन्तु देखा ठीक विपरीत जा रहा है। प्रतिभाएँ अपने साधनों समेत पतन-पराभव की खाई इसलिए खोदने में लगी हुई है कि उनका वैभव काम-चलाऊ न रह कर, कुबेर के समतुल्य बन सके। यही रीति-नीति है, जिसे बड़ों की देखी-देखी छोटे भी अपना रहे हैं। शिक्षित-अशिक्षित, धनी-निर्धन सभी अनाचारी घुड़दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने की बाजी बद रहे हैं।

संकटों और विग्रहों के मूल में साधनों की कमी कारण लगती है, पर वस्तुतः मानवों का पिछड़ापन एवं निकृष्टता से मना हुआ दृष्टिकोण ही आधार-भूत कारण है। उसी ने श्रम, साधन और वैभव को हेय प्रयोजनों के साथ जोड़ा है, परिणामस्वरुप विष बीज बोने पर अमृत फल पाने का स्वप्न कहीं भी साकार नहीं हो रहा है। अशिक्षा, गरीबी, बेकारी आदि समस्यायें जितनी शीघ्र हल की जा सकें उतना ही उत्तम, किन्तु साथ ही एक बात और भी ध्यान में रखी जानी चाहिये कि इनका निराकरण कर देने पर भी मानव या समाज के सुखी-समुन्नत होने की आशा नहीं की जा सकती है। इस विषय में उदाहरण स्वरुप फ्रांस, अमेरिका, ब्रिटेन जैसे समृद्ध देशों को लिया जा सकता है। वहां साधनों की प्रचुरता रहते भी कुत्साएं और कुण्ठाएँ पिछड़े देशों की तुलना में अधिक है। इसके विपरीत जापन जैसा छोटा देश अपनी नैतिक विशिष्टता के कारण स्वल्प साधनों से ही समुन्नत जीवन जी रहा है। अतः साधनों की बहुलता को महत्व देते हुए भी, यह भुलाया नहीं जाना चाहिये कि अन्ततः मानव का व्यक्तित्व ही उपार्जन और उपभोग का आधारभूत कारण है। यदि उस केन्द्र में पिछड़ापन घुसा बैठा रहा, तो भ्रष्ट चिन्तन एवं दुष्ट आचरणों के दृश्य दीखते ही रहेंगे। वस्तुतः मानव के सम्मुख उपस्थित छोटी-बड़ी अनेकानेक समस्याओं, विषत्तियों और विभीषीकाओं का मूलभूत कारण यह है कि- मानव-मानव में विग्रह, सहयोग का अभाव तथा चेतना का पथभ्रष्ट होगा। दृष्टिकोण के दूषित होने से हेय स्तर की ललक-लिप्साएं उभरती है और उनकी पूर्ति के लिये संकीर्ण-स्वार्थपरता, निष्ठुर अनुदारता एवं अनीति-आक्रमकता के तौर-तरीके अपनाने पड़ते हैं। अनीति भरे स्वार्थ साधन के लिये दूसरों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से सताना ही होगा। छद्म छुपा नहीं रहता, फिर आक्रमण का घाव तो बनेगा ही।

अन्ततः घृणा, विक्षोभ से लेकर विग्रह जैसी अनेकों कष्टकारक और दुर्भाग्यपूर्ण प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न होती है और प्रतिशोधों का सिलसिला चल पड़ता है, जिसका कहीं अन्त नहीं। अनाचारी पहले आक्रमण में ही कुछ कमा लेते है और इसके बाद तो चिरकाल तक अविश्वास, असहोयग और प्रतिशोध ही समय-समय पर उभरते हैं। ऐसे वातावरण में किसी को स्नेह, सद्भाव और सहयोग का प्रगति और प्रसन्नता के लिये नितान्त आवश्यक वातावरण तो मिलेगा ही कैसे ? आशंका और आत्मरक्षा के लिये ही मन सदा भयभीत और आतंकित बना रहेगा। यही है वह विश्लेषण-पर्यवेक्षण जिसे आज व्यष्टि और समष्टि के सामने प्रस्तुत असंख्य समस्याओं का एकमात्र कारण कहा जा सकता है। यदि अनुदारता और संकीर्ण स्वार्थपरता के स्थान पर, उदार आत्मीयता की प्रतिष्ठापना की जा सके,

तो उतने भर से मानव-समाज की अनेकानेक समस्याओं का समाधान निकल आयेगा। इसका शुभारम्भ अपने से ही करना होगा। अन्धानुकरण से बचते हुए यदि **सादा जीवन उच्च विचार** की नीति अपनाई जा सके तो कम योग्यता और कम आमदनी वाले मानव भी सुखी, सन्तुष्ट जीवन जी सकते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपना कर कोई भी मानव शरीर को स्वस्थ, मन को प्रफुल्ल और परिवार की सुविकसित उद्यान की तरह मनोरम और शान्तिदायक देखा जा सकता है। सामाजिक, राष्ट्रीय, धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र भी मानव-जीवन से जुड़े हुए हैं। यदि मानव के दृष्टिकोण में आध्यामिकता का समावेश रहे तो मानव-जीवन की सभी दिशाधारा हरी-भरी, फल-फूलों से लदी हुी, उत्साहवर्धक, सन्तोषजनक एवं आनन्ददायक बन कर रहेगी। परिस्थितियां मनचाही न होने पर भी, मनःस्थिति की उत्कृष्टता अपना कर , मानव सदा सर्वदा हंसता-हंसाता, उठता-उठाता दृष्टिगोचर हो सकता है।

सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर की व्यापक समस्याएँ नैतिकता के धूमिल होने और निष्कृष्टता की मात्रा बढ़ जाने के कारण ही उत्पन्न होती है। आत्मीयता, उदारचरिता, सहकारिता और सद्भावना की उदात्त दृष्टि सब प्रकार की सुख-सुविधाओं की जननी है। अधिकारों की तुलना में कर्त्तव्य को प्राथमिकता मिले और मिल बांट कर खाने की आदत पड़ सके, तो कोई कारण नहीं कि सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं की जटिलता सहजता से हल न हो सके। मानव मात्र की अनुदारता की तरह राष्ट्रों की संकीर्णता ही दूसरों की उपेक्षा करके अपना विलास बढ़ाने और अपना वर्चस्व कायम रखने में लगेगी, तो विग्रह और संघर्ष को जन्म देगी ही। इन उलझनों को न कूटनीति चतुरता सुलझा सकती है, न प्रलोभनों, धमकियों और दबावों का माहौल ही चिरस्थायी समाधान प्रस्तुत कर सकता है। मानव प्रभु-दृष्टि का श्रृंगार है। सृष्टि के नियन्ता प्रभु ने मानव को अध्यात्म योग प्रदान करके देवत्व की ओर अग्रसर होने की क्षमता उत्पन्न कर दी है। अध्यात्म योग के विकास से जाति-जाति, राष्ट्र-राष्ट्र और मानव-मानव में जो ईर्ष्या, द्वेष, कटुता, असहिष्णुता एवं शत्रुता की भावना पाई जाती है, वह भी दूर हो सकती है सभ्यता की कल्पनातीत उन्नति और भोगैश्वर्य के असीम सम्भार के बीच भी मानव की आत्मा आज दयनीय दैन्य से पीड़ित है। उसके अन्तर में शून्य एवं हाहाकार है। मानवता करुण-क्रन्दन कर रही है। मानव नैतिक दृष्टि से दीवालिया और आध्यात्मिक दृष्टि से कंगाल है।

आध्यात्मिक जीवन का अवलम्बन लिये बिना मानव जाति की स्थायी सुख-शान्ति नहीं मिल सकती है। हमें स्थायी परिवर्तन के लिये आध्यात्मिक महाक्रान्ति का श्रीगणेश करना होगा, जो अहिंसात्मक हो, वैचारिक हो तथा जिसका लक्ष्य सम्पूर्ण विश्व मानव ही, न कि सीमित व्यक्तियों अथवा एक समाज विशेष का मात्र परिवर्तन। आध्यात्मिक महाक्रान्ति द्वारा ही मानव जा ब्राह्मन्तर परिवर्तन तथा आदर्श मानव-समाज का पुनर्निर्माण सम्भव है। इस आध्यात्मिक महाक्रान्ति की चिनगारी उत्कृष्ट मानवों की आहुति पाकर प्रज्वलित होगी और संगठित प्रयासों के बलबूते दावानल का स्वरुप ग्रहण करेगी। नवसृजन के इस महाक्रान्ति आयोजन में उन भावनाशीलों को आगे बढ़कर हिस्सा बंटाना होगा, जो समस्त मानव-जाति का भविष्य उज्जवल देखने के इच्छुक हैं तथा मानव में देवत्व के उदय की सम्भावना को स्वीकारते हैं।

- आचार्य कर्मवीर

राष्ट्रीय कश्मीर में कैसे हो आतंक का शमन ?

- खुर्शीद दानी

महबूबा मुफ्ती पाकिस्तान के साथ बातचीत की हिमायत कर रही है, लेकिन मौजूदा हालात में इसकी संभावना नजर नहीं आती ।

जहाँ तक मुझे याद पड़ता है कि फरवरी २०१५ के आखिरी हफ्ते में पीडीपी और भाजपा ने मिलकर गठबंधन के एजेंडे के मसौदे को अंतिम रुप दिया था। यह मसौदा वैचारिक रुप से दो भिन्न पार्टियों के मध्य पहले गठबंधन का रोडमैप था। इस मसौदे में जम्मू-कश्मीर की स्थिति में व्यापक सुधार हेतु इस बात की जरुरत पर बल दिया गया था कि यहां के अवाम में व्यापक भरोसे का माहौल निर्मित करते हुए सुनिश्चित किया जाए कि हालात सामान्य और शांतिपूर्ण बने रहें तथा लोगों को भी इसका लाभ मिल सके। इस मसौदे में स्पष्ट रुप से कहा गया था कि गठबंधन सरकार राज्य में सुरक्षा स्थिति की पूर्ण समीक्षा करेगी, ताकि यह देखा जा सके कि सुधरते हालात के परिप्रेक्ष्य में राज्य में लागू विशेष कानूनों की कितनी वांछनीयता या जरुरत है। इसके बाद ही मुफ्ती मोहम्मद सईद ने १ मार्च २०१५ को जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी।

जम्मू-कश्मीर के मौजूदा हालात नब्बे के दशक के उस शुरुआती दौर की याद दिलाते हैं, जब आतंकवाद चरम पर था। आलम यह है कि आतंकी जब और जहां चाहे, सुरक्षा बलों पर हमला करते हुए उन्हें नुकसान पहुंचा रहे हैं। सरहद पर भी पाकिस्तानी सेना द्वारा संघर्ष विराम उल्लंघन की घटनाएँ बढ़ रही है जिससे सीमावर्ती इलाकों के लोग भय में जीने को मजबूर हैं।

तब से अब तक तीन साल गुजर चुके हैं औड़ जमीनी हालात में कोई सुधार नजर नहीं आता। बल्कि अब राज्य के जो हालात हैं वे नब्बे के दशक के शुरुआती दौर की याद दिलाते हैं, जब आतंकवाद चरम पर था। आलम यह है कि आतंकी जब और जहां चाहे, सुरक्षा बलों पर हमला करते हुए उन्हें जमकर नुकसान पहुंचा रहे हैं। इसी साल फरवरी के दूसरे हफ्ते में आतंकियों ने जम्मू और श्रीनगर जैसी दो प्रमुख जगहों पर दो सनसनीखेज हमलों को अंजाम दिया। इससे सुरक्षा तंत्र हिल गया और इन दोनों प्रमुख शहरों में आम जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। जम्मू क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सीमा और नियंत्रण रेखा (एलओसी) के ईर्द-गिर्द संघर्ष-विराम उल्लंघन की बढ़ती घटनाओं से इन सीमावर्ती इलाकों के लोग मौत के भय के साए में जीने को मजबूर हैं।

इस वक्त महबूबा मुफ्ती की अगुवाई वाली राज्य सरकार की स्थिति अजीब है। कुछ हफ्तों की शांति उन्हें बाहर निकलने और जिला मुख्यालयों पर जाकर शासन की स्थिति का जायजा लेने के लिए प्रोत्साहित करता है कि फिर कोई हिंसक वारदात हो जाती है और हालात पुनः पहले जैसे हो जाते हैं। श्रीनगर के एक प्रतिष्ठित अस्पताल के बाहर लश्कर-ए-तोएबा के आतंकी नवीद जट को उसके साथी जिस ढंग से पुलिस की गिरफ्त से छुड़ाने में सफल रहे, वह ऐसा ही एक घटनाक्रम था।

नवीद की फरारी से हुई किरकिरी के बाद महबूबा ने जेल अधीक्षक को निलंबित कर दिया, महानिदेशक (जेल) को हटा दिया और जेल बंद कई आतंकियों को कश्मीर से बाहर दूसरी जेलों में शिफ्ट कर दिया। हालांकि वे उन हालात को संभालने में नाकाम रहीं, जहां पर शोपियां के गनोवपुरा में हिंसक प्रदर्शनकारियों से संघर्ष के दौरान सुरक्षा बलों की गोलीबारी में दो युवकों की मौत हो गई थी। महबूबा ने इस बारे में रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमन से

बात की और पुलिस को इस मामले में एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए। उन्होने इस मामलें में डिप्टी कमिश्नर से २० दिन के भीतर जांच रिपोर्ट भी तलब की। उन्होने वादा किया कि जांच के तार्किक परिणति तक ले जाया जाएगा। गौरतलब है कि इस घटना के विरोध में शोपियां व उसके आसपास के इलाकों (जो कभी सत्ताधारी पीडीपी का गढ़ थे) में १० दिन बंद रहा था।

वास्तव में कश्मीर में आधिकारिक छानबीन या तहकीकात अपने मायने खो चुकी है, खासकर तब जबकि वे सेना के खिलाफ की जा रही हो, जिसे सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून (अफस्पा) का कवच मिला है। ऐसा एक भी मामला नहीं है, जहां पर राज्य सरकार की छानबीन किसी की जिम्मेदारी तय करते हुए अंजाम तक पहुंची हो। हालांकि शोपियां की इस घटना ने एक अलग मोड़ तब ले लिया, जब इस मामले में आरोपी सैन्य अधिकारी मेजर आदित्य कुमार रिटायर्ड लेफ्टिनेंट कर्नल पिता इस एफआईआर के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंच गए। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने १० गढ़वाल राईफल्स के मेजर आदित्य के खिलाफ एफआईआर पर रोक लगा दी और केन्द्र सहित जम्मू-कश्मीर सरकार को नोटिस जारी करते हुए दो हफ्तों के भीतर जवाब पेश करने के लिए कहा।

सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद पीडीपी को भी समझ नहीं आ रहा है कि इस मामले में क्या रुख अपनाया जाए। दो हफ्ते की समय सीमा भी खत्म होने को है। यह पार्टी अपने लोगों को मुंह भी नहीं दिखा पा रही है। गठबंधन को तीन साल हो रहे है और सरकार ने एक एफआईआर दर्ज करने की ताकत भी खो दी है, जिसके आधार पर ही कोई छानबीन शुरु होती है। इससे गठबंधन के एजेंडे में निहित प्रतिबद्धता को निरर्थक बना दिया है। उस दस्तावेज में साफ-साफ लिखा गया था कि भले ही दोनों पार्टियों (पीडीपी और भाजपा) के राज्य में अफस्पा को लेकर अलग-अलग विचार हों, लेकिन वर्तमान में गठबंधन शासन के एजेंडे के तहत यह गठबंधन सरकार इस बात का परीक्षण करेगी कि क्या इसे अशांत क्षेत्रों में डी-नोटिफाई करने की जरुरत है। ऐसा करने से केन्द्र सरकार को भी इन इलाकों में अफस्पा को जारी रखने को लेकर अंतिम निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

महबूबा की स्थिति इस वक्त बेहद अजीब है। वे सत्ता छोड़ते हुए नया जनादेश लेने का जोखिम नहीं उठा सकती, क्योंकि हवा उनके प्रतिकूल है। संभवतः इसी वजह से वे पंचायत और शहरी स्थानीय निकायों के चुनावों को स्थगित करने के लिए मजबूर हो गई थी। यह वजह है कि वे बार-बार भारत-पाकिस्तान के मध्य बातचीत पुनः शुरु करने पर जोर दे रही है। विधानसभा के बजट सत्र के समापन पर उन्होने ट्वीट किया कि यदि हमें इस रक्तपात को रोकना है तो पाकिस्तान के साथ संवाद जरुरी है। मुझे पता है कि मेरी इस बात के बाद टीवी न्यूज एंकरों द्वारा मुझ पर राष्ट्रविरोधी होने का ठप्पा लगा दिया जाएगा लेकिन यह मायने नहीं रखता। जम्मू-कश्मीर के लोग भुगत रहे हैं। हमें बात करनी होगी, क्योंकि युद्ध कोई विकल्प नहीं।

लेकिन मौजूदा सूरते-हाल में तो पाकिस्तान से बातचीत की संभावना दूर-दूर तक नजर नहीं आती। अलबत्ता भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और उनके पाकिस्तानी समकक्ष लेफ्टिनेंट जनरल (रिटायर्ड) नासिर खान जुंजुआ के मध्य बैकांक में दिसम्बर में बैठर जरुर हुई थी। लेकिन साफ है कि ऐसी गोपनीय बैठकों से मदद नहीं मिली। बीते दो माह से सरहद पर विकट हालात हैं। गोलीबारी में दोनों ओर के सैनिक मर रहे हैं और सीमावर्ती इलाकों के लोगों को विस्थापन के लिए मजबूर होना पड़ा है। सेना द्वारा आतंकवादियों की धरपकड़ और खात्मे के लिए चलाए जा रहे आपरेशन ऑल आउट के बावजूद घाटी में आतंकवाद बढ़ रहा है स्थानीय फियादीन उभर रहे हैं और जैश-ए-मुहम्मद जैसे संगठनों की गतिविधियाँ बढ़ गई है।

कश्मीर में केन्द्र के विशेष प्रतिनिधि दिनेश्वर मिश्र के अनेक दौरे हो चुके हैं। वे इस हफ्ते की शुरुआत में भी यहां पहुंचे, लेकिन उनकी मेल-मुलाकातों का सिलसिला राज्यपाल व मुख्यमंत्री के अलावा कुछ चुनिंदा प्रतिनिधिमंडलों से आगे नहीं बढ़ा है। अलगाववादी अभी भी इस संवाद प्रक्रिया से दूर हैं। दिल्ली में बैठे शीर्ष राजनीतिक नेतृत्व की चुप्पी बरकरार है। ऐसे में कश्मीर में जल्द हालात सुधरने की सूरत फिलहाल तो नजर नहीं आती।

(लेखक श्रीनगर स्थित पत्रकार हैं)

अनुकरणीय है राम का चरित्र

ऐतिहासिक

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

गतांक से आगे.....

पत्नी व्रती राम :- राम ने अपनी पत्नी सीता को सर्वाधिक महत्व दिया और इस बात को सीता भी समझती थीं कि राम के हृदय में वह धर्म पत्नी है। सीता मार्ग में गमन करते समय कहती है- स्वामी धर्म में बड़ा बल है पर उसे अधर्म सूक्ष्म भावों से आकर दूषित कर देता है, उन्हीं लोगों का धर्म शुद्ध रहता है जो काम से होने वाले दोषों से बचे रहते हैं। काम के तीन बड़े व्यसन है १. झूठ बोला २. परस्त्री गमन ३. बिना बैर किसी को मारना। पहली दो बातें तो आपमें न थी और न होगी परस्त्री गमन तो आपके संकल्प में ही नहीं आया क्योंकि आप दृढ़ स्त्रीव्रती हैं। पूर्ण धर्मात्मा व सत्य प्रतिज्ञ हैं। पर तीसरी बात है जो कि आपने ऋषियों से कहा है यज्ञ में नाश करने वाले राक्षसों को मारेंगे।

इस पर राम ने कहा कि जानकी अब तो मैंने प्रण कर लिया है, जब तक देह में प्राण हैं ऋषियों की राक्षसों से रक्षा करूंगा।

जब सूर्पनखा ने वन में राम से विवाह हेतु आग्रह किया - मैं आपको अपना पति बनाने यहां आई हूँ -

तुम सन पुरुष न मो सम नारी।
यह संयोग विधि रचा संवारी॥ (राम चरित मानस)

अतः आप मेरे साथ विवाह कर लो मुझमें सब प्रकार के गुण हैं - मुझे तिरस्कार करने वाला कोई नहीं है यह सुन राम ने कहा मैं विवाहित हूँ और मेरी प्रिय सीता मेरे साथ है मैं दूसरा विवाह नहीं कर सकता।

राम ने सूर्पनखा से स्पष्ट मना कर दिया जब उसने लक्ष्मण से विवाह की बात कही तो उन्होंने उसकी नाक ही काट दी।

विद्वानों का सम्मान :- जब राम सीता को ढूंढते ऋष्यमूक पर्वत (मलयाचल) पर पहुंचे वहां किष्किन्धापुरी के हनुमान व सुग्रीव रहते थे सुग्रीव का बड़ा भाई बाली शूरवीर था परन्तु क्रूर व हठी थी। सुग्रीव को बाली ने राज्य से निष्कासित कर दिया था, सुग्रीव के साथ उसकी श्रेष्ठता को देख हनुमान व चार पांच मंत्री जी साथ आ गए थे, जब राम लक्ष्मण वहां पहुंचे तो सुग्रीव ने भय से विचार किया कि कहीं बाली ने मारने को तो नहीं भेजा है ऐसा सोच हनुमान को परिचय हेतु भेजा हनुमान ब्राह्मण का वेश रख राम लक्ष्मण के समीप जाकर बोले -

"हे राजर्षि देव समान तेजस्वी महात्मन तपस्वियों के वेश में इस नदी एवं वन की शोभा को बढ़ाते हुए सुवर्ण समान देह वाले सुन्दर धनुषों को धारण कर धैर्य की मूर्ति सिंह समान पराक्रमी सूर्य चन्द्र के समान तेजस्वी कौन और इधर कैसे पधारे हैं ?

इस पर लक्ष्मण ने पूछा आप कौन है किस के दूत हैं ? हनुमान ने कहा -

युवाभ्यां स हि धर्मात्मा सुग्रीवः सख्यमिच्छति।
तस्य मा सचिवं वित्तं वानरं पवनात्मजम्॥

हमारा राजा सुग्रीव है वह आपसे मित्रता चाहता है, वह बड़ा धर्मात्मा है विद्वान् है मैं पवन पुत्र उसका मंत्री हूँ- यह सुन राम ने लक्ष्मण से कहा देखो यह सुग्रीव का मन्त्री कैसा चतुर व विद्वान् है और कैसी कल्याणकारी स्पष्ट वाणी बोलता है इतनी देर बोलने पर भी उसने कोई अशुद्ध व्याकरण नहीं बोली।

नानृग्वेद विनीतस्य ना यजुर्वेद धारिणः।
ना सामवेद विदूषः शक्यमैव विभाषितुम्॥
नूनं व्याकरणं कृत्स्न मनने बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न कि किञ्चदपशब्दितम्॥
न मुखे नत्रयोश्चापि ललाटे च भ्रुवोस्तथा।

अन्येष्वापि च गात्रेषु दोषः संविदितः क्वचित ।।

अर्थात् हे लक्ष्मण बिना ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद के ज्ञान के कोई ऐसा शुद्ध नहीं बोल सकता निःसन्देह इन्होंने अनेक बार व्याकरण पढ़ा है यह सुशिक्षित सभ्य संस्कारवान माता-पिता के आज्ञाकारी हैं, बोलते समय नेत्र, भू, भ्रकुटी से कोई चञ्चलता दिखायी नहीं देती।

राम लक्ष्मण को समझाते हैं कि भ्रातश्री हनुमान वेद व्याकरण के विद्वान् हैं, इनसे संयमपूर्वक सहजता से बात करना। राम ने हनुमान को पहलीबार में ही समझ लिया था कि वह वेद के मर्मज्ञ सदाचारी धर्माचारी महान विद्वान् हैं राम हनुमान का अत्यधिक सम्मान करते थे।

शरणागत की रक्षा :- रावण ने विभीषण को लंका से निकाल दिया तो विभीषण सीधे राम के पास गया इस पर सुग्रीव ने कहा कि यह (विभीषण) शत्रु भाव से हमारे पास आया है। राम ने कहा -

मित्र भावेन सम्प्राप्तं न त्यजेयं कथंचन ।
दोषो यद्यपि तस्मिन स्यात्सतामेत द्विर्गिहतम ।।

अर्थात् मित्र भाव से आए हुए को मैं कभी नहीं त्याग सकता यद्यपि इसमें नैतिक दोष हों, पर सत्पुरुषों के लिए बड़ी निन्दा का स्थान है कि वे शरण आए मित्र को ग्रहण न करें।

वीरोचित सम्मानकर्ता :- ब्रह्मास्त्र से जब रावण की मृत्यु हो गयी तो विभीषण अपने भ्राता की याद कर विलाप करने लगा ऐसे में राम ने विभीषण को सान्त्वना दी। "मित्र यह रावण शोक करने के योग्य नहीं क्यों कि यह असमर्थ होकर नहीं मरा दीन-हीन होकर नहीं मरा, अपितु अति उत्साह व विक्रम के साथ लड़ता हुआ मेरे शस्त्र बल से मरा है।"

"शुद्ध में विजय निश्चित नहीं होती युद्ध में या तो शत्रु के हाथों मरना होता है या शत्रु मारा जाता है पुराने ऋषियों की यह मर्यादा चली आ रही है कि जो क्षत्रिय वीरों की भांति युद्ध में मरे वह शोक के योग्य होता है।"

ऋषि वाल्मीकि कृत रामायण का पाठ करने तथा उन विषयों को जीवन में उतार आचरण करने वाले का धर्म यश व आयु एवं समाज में सम्मान की वृद्धि होती है महात्मा राम का चरित्र आज भी अनुकरणीय है। एक अच्छा पिता, पुत्र, भ्राता, पति, प्रजापालक, राजा व राष्ट्र भक्त माता-पिता भक्त, ज्ञानवान, व्यक्ति श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए रामायण व राम के आचरण से प्रत्येक को शिक्षा लेना चाहिए।

आज जो चारों ओर अनैतिकता, अनाचार, असभ्यता, मद्यपान, प्रमाद, अपस्वार्थ, रिश्वतखोरी, भौतिकवाद, सत्तालोलुपता, अशिक्षा, अज्ञानता आदि बढ़ कर वातावरण में भय व्याप्त हो रहा है प्रत्येक व्यक्ति चिन्ता के वातावरण में जी रहा है। इन व्याधियों को दूर करने को श्रीराम का चरित्र आज के समय में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

राम का निर्माण गुण व संस्कारों से हुआ था जो महर्षि विश्वामित्र, महर्षि वशिष्ठ तथा गुरुकुल व आश्रमों में ऋषियों के सान्निध्य से, वेद की शिक्षा से ही मिले थे वैदिक ज्ञान ही तो था जिससे आर्यावर्त में सहस्रों वर्ष तक दीर्घकाल तक चक्रवर्ती शासक होते रहे। आज भी हमें वैदिक शिक्षा का महत्व समझना चाहिए।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

योग-ध्यान, साधना शिविर

जम्मू कश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू कश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्य स्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य माँ सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में **दिनांक ८ से १५अप्रैल २०१८ तक** निःशुल्क योग-ध्यान-साधना, योगासन आदि का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर वैदिक प्रवचन तथा योगदर्शन एवं उपनिषादि पर भी व्याख्यान होंगे। शिविर में युवा एवं प्रभावशाली वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी, स्वामी नित्यानन्द जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए **फोन नं. ०९४१९१०७७८८, ०९४१९७९६९४९ व ९४१९१९८४५१ पर तुरन्त सम्पर्क करें।**

- भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

पर्व प्रेरणा

बसंतोत्सव बनाम नवशस्येष्टि

- अनिल कुमार आर्य

यह भारत वर्ष सदा से पर्वप्रिय देश रहा है यहां वर्षभर एक के बाद एक पर्व मनाये जाते हैं। जो भारतीय जनमानस में मिलजुल कर रहने की भावना को उद्दीप्त करते हैं। वस्तुत: ये पर्व उत्साह से अपने कर्त्तव्य में जुटे रहने की प्रेरणा के साथ-साथ लोगों के जीवन स्तर को प्रोन्नत बनाने में अहम् भूमिका निभाते है। पाणिनीय व्याकरण के आधार पर **पृ पालनपूरणयो:** धातु से पर्व शब्द निष्पन्न होता है जिसका अभिप्राय है **जनान् आनन्देन पूरयतीति पर्व** अर्थात् जनमानस में जो प्रसन्नता व हर्ष का संचार कर दे उसका नाम पर्व है। उड़ीसा में कहावत है, **बार मास रे तेर टी** पर्व अर्थात् विश्व में केवल अपना भारतवर्ष ही ऐसा देश है जहां पर बारह महिने में तेरह पर्वों मनाये जाते है यह इस देश की एक अन्यतम खासियत है उपर्युक्त कहावत के आधार पर उड़ीसा में जिन तेरह पर्व की गणना की जाती है यद्यपि देश में सर्वत्र उन्हीं नामों एवं रूपों में वे पर्व नही मनाये जाते पुनरपि किसी न किसी रूप में अपनी भावनाओं का इजहार तो पर्वो के जरिये करते ही है इस अंतिम सत्य को कौन नकार सकता है ?

देश में मनाये जाने वाले अनगिनत पर्वों में से चार पर्व ऐसे है जो पृथक्-पृथक् अपना अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं वे है **श्रावणी उपाकर्म, विजयादशमी, दीपावली, और होली**। एक प्रचलित मान्यता के अनुसार श्रावणी पर्व ब्राह्मणो का पर्व माना जाता है विजयादशमी को क्षत्रियों का पर्व मानते हैं। दीपावली वैश्यों की मानी जाती है और होली को शूद्रों का पर्व कहा जाता है उपयोगिता को लक्ष्य कर यदि इन बातों का विश्लेषण करें तो स्थिति यह है - मान लिया ब्राह्मणों के लिये श्रावणी उपाकर्म है क्योंकि स्वाध्याय का चातुर्मास्य इसी पर्व से आरंभ होता है। वनों में रहने वाले वानप्रस्थ मुनिगण वर्षा ऋतु की वजह से ग्रामों में आ जाते थे और वेद कथा प्रवचन आदि के द्वारा वर्षाकाल व्यतीत करते थे इस दिन यज्ञोपवीत परिवर्तन करने की प्रथा भी पुराने काल से चली आ रही है इस दृष्टि से यदि इस पर्व के ऊपर ब्राह्मणों की मुहर लगाई जाये तब तो ठीक है। विजयादशमी का औचित्य क्षत्रिय के संबंध में यदि इस आधार पर माना जाय कि विजयादशमी से पूर्व चौमासा होता है वर्षाकाल में आबालवृद्धवनिता सब बड़ी श्रद्धा से महात्माओं के अमृत वचन सुनते थे और वर्षा की समाप्ति पर इस विजयादशमी का आयोजन होता था, जिसमें क्षत्रियगण अस्त्र-शस्त्रों को ठीक करते थे जिनमें जंग लग गया होता था फिर अपने बंधुवान्धवों से अंतिम भेंट करके युद्ध यात्रा में निकल जाते थे।दीपावली में आमतौर पर देश में लक्ष्मी पूजा का प्रचलन है। लक्ष्मी की प्राप्ति के नये सिरे से योजनायें बनाई जाये, लाभ-हानि को लक्ष्य कर जिनमें लाभ हो उन्हीं व्यापारों का ही अनुष्ठान हो इस प्रकार इस संबंध में कुछ हद तक ये बातें ठीक मानी जा सकती है, परंतु जहां तक होली की बात है कि शूद्रों का है, पर मानते सभी हैं, यह बात अनुचित है होली दीपावली के संबंध में यह जो उपयुक्त मान्यता का दिग्दर्शन मैने कराया है इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह जबरदस्ती तुक भिड़ाने की अनर्थक कोशिश मात्र है। वस्तु स्थिति के साथ वास्तव में इन बातों का दूर का भी संबंध नहीं है। निष्कर्षत: वास्तविकता तो यह है कि इस देश में दो प्रकार की फसलें होती है : रबी और खरीफ। ये दोनों फसलें क्रमश: जब कट करके आती थी तो दीपावली एवं होली के पर्व मनाये जाते थे। इन पर्वों को नवशस्येष्टि के रूप में यहां मनाते थे।नवशस्येष्टि का अर्थ नये अन्न से यज्ञ होता है। आइये इस नवशस्येष्टि बनाम होलकोत्सव अथवा बसंतोत्सव पर पुराकालीन साक्ष्यों के आधार पर जरा चिंतन करें हमारे हिन्दू त्यौहार प्रकृति और मौसम के बदलने के साथ-साथ आते जाते रहते हैं।इस प्रकार होली का पर्व भी वसंत ऋतु के साथ ही आता है। वसंत ऋतु को ऋतुराज अर्थात ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है। ऋतुराज वसंत का अविर्भाव हो चुका है वसंत ऋतु के

साथ साथ प्रकृति की छटा में भी परिवर्तन आ गया है।उसका रूप दिन प्रतिदिन रम्य से रम्यतर होता जा रहा है।आज वसंत भी अपने पूर्ण यौवन पर है।वनोपवन में शहर और गांवों में सर्वत्र नयनाभिराम विकास मन को मोद से भर देता है।चराचर जगत् ने भी इसी आनन्द से प्रफुल्लित होकर नवीन बाना बदल लिया है। उद्यानों में नवविकसित कुसुमों की बहार है। और खेतों में परिपक्व यव और गोधूम के शस्यों की सुनहरी सरिता तरंगित हो रही है। पशुओं ने नवीन रोमावली के चित्र -विचित्र अभिनव परिधान धारण किये हैं। पक्षियों की चारू चहचहाटसे सुन्दर सरसता का संचार हो गया है।कलकण्ठा कोकिला की कूक मयूर की केका,तरूण तीतर का तारस्वर तथा कपोत का कलरव या कबुतरों की गुटरगूं,वायुमंडल को मधुरिमासे परिपूर्ण कर रहा है।मलयाद्रि को धीर सुगंध समीर अठखेलियां करता हुआ चला रहा है।

ऐसे उदार और मनोहर सुसमय में आषाढ़ी शस्य के शुभागमन की शुभाशा जनता और किसानों के मन में मोद,मौज मस्ती और उल्लास भर देती है इस मास की फसल भारत की सब फसलों में सर्वश्रेष्ठ और सिरमौर गिनी जाती है। ऐसे जीवनाधार सर्वपालक शस्य फसल की अवाई पर कृषकों का मन बल्लियों की तरह उछलने लगता है। ऐसे सुखद अवसर पर आनन्दोत्सव और रंगरेलियां मनाना स्वाभाविक ही है। यह केवल भारत की ही विशेषता नहीं किन्तु सूरीनाम में भी नव शस्य के प्रवेश का उत्सव मनाया जाता है किन्तु यह भारतीय होली का उत्सव केवल अमोद-प्रमोद का ही साधन नहीं है धर्मपरायणता का भी है क्योंकि हिन्दूओं की प्रत्येक बात में धार्मिकता और वैज्ञानिकता जुड़ी हुई है। शीतकालीन वर्षा के अनन्तर आवासों की परिष्कृति के लिये तथा वसंत की नई ऋतु बदलने पर अस्वास्थ्य के प्रतिरोध के लिये हवन से वातावरण को शुद्ध करने का अभिप्राय भी है।गीता में कहा

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषै : ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥

अर्थात् नई फसल से सर्वप्रथम यज्ञ किये बिना ही जो व्यक्ति उस अन्न का सेवन कर बैठते है वे केवल पाप ही खाते और इसके विपरित जो यज्ञ भगवान को हवि प्रदान करनें के उपरान्त अन्न का सेवन करते हैं वे सब प्रकार के पापों से छूट जाते है।गीता के अन्दर एक अन्य स्थान में कहा गया है कि

तैर्दत्तान्प्रदायेभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः

अर्थात् देवों द्वारा दी गयी वस्तुओं को यज्ञ के माध्यम से उन्हें लौटाकर सीधे सेवन आरंभ करने वाले चोर होते हैं उपर्युक्त तमाम बातों से यह जानकारी मिलती है कि यहां नवशस्येष्टि के रूप में दीपावली होली में यज्ञों की पवित्र परम्परा रही है आज भी कुछ प्रान्तों में होली के अवसर पर पहले पके चने आदि अग्नि में चढ़ाते है और अर्धपक्व यानी होलक होने पर उसका सेवन करते हैं प्राचीन यज्ञों का यह अपभ्रंश रूप ही है। आज आवश्यकता है अपनी संस्कृति के अनुरूप पर्वो के पालन करने की।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त भी आज इन पर्वों में अनेंक विकृतियों और फूहड़पन का प्रवेश हो गया है जैसे दीपावली में जुआ खेलना जबकि वेद में अक्षैर्मा दीव्य कहकर इसे घोर निन्दनीय कृत्य बताया गया है।इसके दुष्परिणामों का इतना विस्तृत चित्रण वेद के अंदर प्राप्त होता है जिसे पढ़कर अनायास इस महान् अनर्थ आचरण के फल का सहज ही परिचय प्राप्त हो जाता है।

नवशस्येष्टि के रूप में परम पावन यज्ञ के स्थान पर पटाखे आदि छोड़कर वायुमंडल को दूषित करना आदि होली के पवित्र अवसर पर भद्दी गालियां देना रंग छिड़कना आदि पर्व की महत्ता पर तुषारापात करते हैं इन पर्वो की पवित्रता को बचाये रखने कें लिये हम सबका नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि हमें अपनी **सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा** की सुरक्षा हेतु इन पर्वों के माध्यम से केवल उन्हीं रीतियों एवं नीतियों का अनुसरण करना चाहिये जिससे अपनी प्राचीन सभ्यता की गौरवमयी झलक प्राप्त हो सके।

आईये इन प्राचीन पर्वों की गुणवत्ता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये हम सभी अपनी योग्यता,क्षमता व सामर्थ्य के अनुसार बद्धसंकल्प होकर समृद्ध समाज की संरचना में सहभागी बनें।

पता : - आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)

प्रेरणास्पद

उड़ियो पंख पसार

- कन्हैयालाल आर्य

मनुष्य बहुत चतुर प्राणी है। वह अपने गणित से सभी आविष्कार कर लेता है। किसी ने कहा है-

"अब हम सांची कहत है उड़ियो पंख पसार" हम आपसे सत्य ही सत्य कह देते हैं, सौ टके सत्य बात कहते हैं और सत्य बात यह है - उड़ियो पंख पसार। अपने भीतर के आकाश में पंखों को पसारो और उड़ो। कथा कहानियों में मत उलझे रहो। यह आधार का ज्ञान काम नहीं आयेगा। अपने ही पंखों को फैलाओ। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम उड़े, योगीराज श्रीकृष्ण उड़े, युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द उड़े, महावीर बुद्ध उड़े। तुम्हें भी उड़ाना होगा। अपने ही पंख काम आयेंगे।

उड़ियो पंख पसार। पसारो अपने पंखों को। साहस जुटाओ भय तो लगता है। भीतर जाने में भय लगता है, क्योंकि वहां भीतर हम बिल्कुल अकेले हो जाते हैं। बाहर तो अपने हैं, प्रियजन हैं, बन्धु-बान्धत्व हैं, मित्र हैं, पति-पत्नी, पुत्र-पिता सब हैं। बाहर तो सारा संसार है परन्तु भीतर तो इनमें से कोई भी नहीं है। अकेले होने से हम भयभीत हैं। अकेले होने में बड़ी घबराहट होती है, कहीं डूब न जायें, कहीं सहारे टूट न जायें। अतः हम दूसरों को पकड़े रहते हैं। पति-पत्नियों को और पत्नियाँ पति को पकड़े हुए हैं और एक जन्म में ही नहीं सात-सात जनमों की बात की जाती है। जो कल तक जन्मों-जन्मों की बात किया करते थे, वे आज सम्बन्ध विच्छेद करने के लिए न्यायालयों में खड़े मिलते हैं।

लोग सम्बन्ध बना रहे हैं, अमरता के जाल गूंथ रहे हैं। एक दूसरे को झूठे आश्वासन दे रहे हैं, भीतर जायेंगे तो अकेले हो जायेंगे। यह अकेलेपन का भय हमें सता रहा हैं। जब कोई पहली बार भीतर प्रवेश करता है तो उन्हें लगता है कि अन्दर अन्धकार ही अन्धकार है, प्रकाश नहीं है। धीरे-धीरे अन्धकार को खोदते खोदते प्रकाश मिल ही जाता है। हमने जन्मों-जन्मों तक तो अन्धकार एकत्रित कर रखा है। उसकी परतें इतनी गहरी हो गई उनकी खुदाई भी तो गहरी करनी पड़ेगी। भूमि में जल तोहैं। जैसे-जैसे कोई व्यक्ति कुआं खोदता है, तो एकदम जल की प्राप्ति तो नहीं होती। यद्यपि भूमि में जल तो हैं परन्तु पहले कंकड़-पत्थर आयेंगे, कूड़ा कचरा आयेगा, फिर गीली मिट्टी आयेगी फिर गन्दा पानी आयेगा। ऐसे खोदते जाओ, खोदते जाओ, एक दिन निर्मल झरना उपलब्ध हो जायेगा। ऐसी ही अन्तर की खुदाई करनी होगी।

उतनी प्रतीक्षा नहीं है हमें। हम चाहते हैं कि शीघ्र सारा कर्म सम्पन्न हो जाये। कोई दूसरा ही इस कार्य को कर दे। हम पण्डितों और पुरोहितों के जाल में पड़े हुए हैं। हम सोचते हैं कि ये हमारे लिए प्रार्थना कर लें, ये हमारे लिये पूजा कर लें।

मेरे पास लोग आ कर कहते हैं- "हमारे लिए आप परमात्मा से प्रार्थना करें।" मैने कहा - श्रीमान जी ! यह भी खूब रही। पाप करो तुम। प्रार्थना करूं मैं। पाप करते समय मुझे क्यों नहीं पूछते ? अरे भाई ! मेरा खाया मेरे शरीर को पुष्ट करेगा। मेरी की गई प्रार्थना मेरे जीवन में सुधार लायेगी। यह प्रार्थना कोई व्यापारिक लेन-देन नहीं है। मेरी प्रार्थना मेरे काम आयेगी, तुम्हारे नहीं। इसलिए अपनी यात्रा तुम्हें स्वयं ही करनी होगी।

विचारिये ! तुम कब से भीतर नहीं गये। स्मरण है। विचारोगे तो पता चलेगा कि कभी प्रयास ही नहीं किया, जब प्रयास ही नहीं किया तो भय तो अवश्य लगेगा। कई सज्जन मेरे पास आते हैं, बस उनके मुख से एक ही स्वर निकलता है :- "आप का आशीर्वाद चाहिये।" मैं उनसे कहता हूँ, भाई ! केवल मेरे आशीर्वाद से कुछ नहीं बनेगा, ध्यान तुम्हें स्वयं करना होगा, प्रार्थना तुम्हें स्वयं करनी होगी, मैंने उनसे कहा कि यदि मुझ पर इतना विश्वास है तो तुम ऐसा करो, दुकान भी बन्द करो, धन्धा भी बन्द करो, फिर क्या केवल मेरे आशीर्वाद से बात बन जायेगी। तब वे असमंजस में पड़ जाते हैं और कहते है, यह बहुत कठिन है।

यदि तुम स्वयं कुछ नहीं करोगे तो केवल आशीर्वाद से कुछ नहीं बनेगा। वास्तविकता यह है कि कोई भ्रम तो नहीं करना चाहता। केवल आशीर्वाद और गुरु कृपा का सहारा लेना चाहते हैं। वे परमात्मा को पाना तो चाहते हैं, परन्तु इसके लिए पुरुषार्थ नहीं करना चाहते। सब कुछ निःशुल्क प्राप्त हो जाये। अरे भाई ! श्रम स्वयं करना होगा। साधना और ध्यान स्वयं करना होगा। अपने पंख स्वयं उड़ाने होंगे, फड़फड़ाने होंगे। पर यह क्या ? तुमने कई जन्मों से इन्हें हिलाया ही नहीं। ये तुम्हारे पंख तुम्हारे पास तो है, परन्तु उड़ना भूल गये हैं।

प्रायः यह होता है कि जो पक्षी बहुत दिनों तक पिंजड़े में बन्द रह गया, कुछ दिनों के पश्चात् उसे पिंजड़ें से बाहर निकालो तो वह उड़ न सकेगा। वह भूल ही जाता है कि पंख उनके पास है। यदि उड़ने का प्रयास भी करता है तो सम्भवतः गिर जाता है, फड़फड़ा कर गिर पड़ता है। प्रायः जो तोते पर्याप्त समय तक पिंजड़ों में बन्द रहते हैं, छोड़ दिये जाने पर वे या तो शीघ्र ही मृत्यु का शिकार हो जाते हैं, या कोई बिल्ली उन्हें खा जाती है, या चील झपट कर मार देती है। वे अपने को सुरक्षित नहीं रख सकते। वे भूल जाते हैं कि उनके पास पांव भी है। विस्मरण का बड़ा पर्दा उनके बीच में आ जाता है।

यदि खोल सको पांव अपने, उड़ सके अपने स्वभाव में, उड़ सको अपने स्वरुप में, तो हो जाओगे दुःख के पार, हो जाओगे इस शरीर के सरोवार के पार। यह भवसागर पार हो जायेगा। ये हमारे बहुमूल्य वचन हैं।

मैं तुम्हें अर्थ समझा दूंगा, परन्तु मेरा अर्थ मेरा अनुभव होगा। तुम सुन लोगे, तो तुम्हारे कान तक पहुंच जायेंगे। परन्तु पंख तो तुम्हें अपने ही खोलने होंगे। तुम्हें यात्रा तो अपनी ही करनी पड़ेगी। मैं संकेत दे सकता हूं, इंगित कर सकता हूं। कैसे पंख फड़फड़ाओगे, कैसे पहला पग आगे बढ़ाओगे। ये सब सूचनायें तुम्हें दी जा सकती है परन्तु यात्रा तो तुम्हें स्वयं ही करनी पड़ेगी। कोई दूसरा तुम्हारे लिये यात्रा नहीं कर सकता। प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा तक स्वयं ही चलकर पहुंचना होता है, यह यात्रा उधार नहीं हो सकती।

पता : उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा.

-: निवेदन :-

जरा विचार करें वैदिक ज्ञान को अर्थात् ऋषियों के ज्ञान को छोड़ने से देखिये देश की, समाज की व संतानों की क्या दुर्गति हो रही है। आज का परिवेश कितना शर्मसार हो गया है। प्रिय सज्जनों, अब भी वक्त है, हम संभल जायें, ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर तथा उनके द्वारा दी गई आर्ष शिक्षा का पाठ्यक्रम लागू करें और विदेशी ज्ञान का जो मनुष्य को राक्षस बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। उस को बहिष्कृत करें। मित्रों एक और है कि तोता दूसरों की वाणी के द्वारा बोले गये शब्द को बोलता है, इसलिए वह पिंजरे में कैद रहता है और कोयल अपनी ही स्वभाषा बोलती है, जिससे वह स्वतन्त्र होती है। अतः आर्यावर्त्त के सज्जनों हम अपना ज्ञान को पुनः सभी ओर फैलाये अन्यथा १९४७ के पूर्व दिन आने में देर नहीं।

प्रवेश सूचना, सत्र-२०१८-१९

गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर

सम्बद्ध , गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

कक्षा ६वीं, ७वीं, ८वीं, ९वीं, ११वीं, और बी.ए. प्रथम वर्ष के नवीन छात्रों की प्रवेश परीक्षा १५ अप्रैल २०१८ को प्रातः १० बजे गुरुकुल में आयोजित होगी। आवेदन पत्र भरकर १० अप्रैल २०१८ तक जमा करायें। आवेदन पत्र डाक द्वार भी मंगाए जा सकते हैं। उत्तीर्ण छात्रों का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा। **विशेष : सम्पूर्ण संस्कृतमय वातावरण के साथ-साथ उत्तम पुस्तकालय एवं मल्टीमीडिया की विशेष व्यवस्था है। आवेदन शीघ्र करें (स्थान सीमित) सम्पर्क सूत्र : व्हाट्सएप नं. ०९९८८१-६३२३९, गुरुकुल अधिष्ठाता ०९८८८७-६४३११, ०८५४४८-७८५४१।** ***निवेदक : ध्रुव कुमार मित्तल***

स्पन्दन

''प्रेम''

सेवा के लिए पहली शर्त प्रेम है अर्थात् जिसके दिल में प्रेम है वही सेवा कर सकता है। टालस्टाय ने कहा है- "प्रेम स्वर्ग का रास्ता है।" बुद्ध का कथन है- "प्रेम इंसानियत का नाम है।" ईसा ने कहा कि- "प्रेम संसार की ज्योति है।" विक्टर ह्यूगो का कहना है - "जीवन एक फूल है और प्रेम उसका मधु।" रामकृष्ण परमहंस ने कहा है - "प्रेम अमरता का समुंदर है।" कबीर का कथन है- "जिस घर में प्रेम नहीं उसे मरघट समझ बिना प्राण के सांस लेने वाली लुहार की धौंकनी।"

जा घट प्रेम न संचरे... सो घट जान मसान
जैसे खाल लुहार की सांस लेती बिन प्राण ... ॥

अलग-अलग शब्दों में सभी महापुरुषों ने प्रेम का बखान किया है वास्तव में प्रेम मानव जाति की बुनियाद है प्रेम ऐसा चुम्बक है जो सबको अपनी ओर खींच लेता है, जिसके हृदय में प्रेम है उसके लिए सब अपने हैं। भारतीय संस्कृति में तो सारी पृथ्वी को एक कुटुम्ब माना गया है। वसुधैव कुटुम्बकम्।

अयं निजः परो-वेति गणनां लघुचेतसाम्।
उदार-चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

जो सबको प्रेम करता है उससे बड़ा दौलत मंद कोई नहीं हो सकता। वह दूसरे के दिल में ऊंची भावना पैदा कर देता है। आप जानते है आदमी को भूमि से कितना मोह होता है। कौरवों ने कहा था कि हम पाण्डवों को सुई की नोक के बराबर भी जमीन नहीं देंगे लेकिन विनोबा के प्रेम ने लाखों एकड़ भूमि इकट्ठी करा दी। उन्होंने लोगों से यह नहीं कहा कि मुझे जमीन दो, नहीं दोगे तो कानून से या जोर जबरदस्ती से तुम्हारी जमीन छिनवा दूंगा। जिसका हृदय प्रेम से सराबोर हो वह ऐसी भाषा कैसे बोल सकता था। उन्होने कहा - मेरे सारे भाईयों ! मैं तुम्हारे घर पर आया हूँ। तुम्हारे पांच बेटे हैं छठा होता तो उसका भी लालन-पालन करते न। मुझे अपना छठा बेटा मान लो और मेरा हिस्सा मुझे दे दो।

विनोबा का यह प्रेम ही था, जिसने लोगों के हितों को मोम बना दिया। किसी किसी ने तो अपनी सारी जमीन उनके चरणों में रख दी। प्रेम के इतने बड़े चमत्कार की घटनाएँ हम किताबों में पढ़ते हैं पर आज के युग में विनोबा जी ने उसे साकार करके दिखा दया। जिसका हृदय निर्मल है उसी में ऐसे महान प्रेम का निवास रहता है। वैसे तो हम रोज प्रेम करते हैं अपने बच्चों के अपने संबंधियों के अपने मित्रों के प्रति प्रेम का व्यवहार करते हैं लेकिन बारिकी से देखें तो वह असली प्रेम नहीं है। हमारे प्रेम में कर्त्तव्य की थोड़ी बहुत भावना रहती है पर साथ ही यह स्वार्थ भी कि हमारे बच्चे बड़े होकर बुढ़ापे का सहारा बनेंगे। सगे संबंधी मुसीबत में काम आवेंगे। अगर हमें यह भरोसा हो जाय कि हमारा काम दूसरों के बिना भी चल जाएगा। तो सच मानिए हमारे प्रेम का बर्तन बहुत कुछ खाली हो जाएगा। ऐसा प्रेम हमारे जीवन में छोटी मोटी सुविधाएँ पैदा कर सकता है, पर दुनियां को बांध नहीं सकता।

असली प्रेम तो वह है जिसमें किसी प्रकार की बदले की भावना न हो। इतना ही नहीं उसमें विरोधी के लिए भी जगह हो। गर्मी से व्याकुल होकर हम जाने कितनी बार सूरज को कोसते हैं पर क्या सूरज कभी हम पर नाराजगी दिखाता है ? हम धरती को रोज पैरों से दबाते हुए चलते हैं पर वह क्या कभी गुस्सा होती है ? जरा गर्म हवा आती है तो हम कहते हैं मार डाला कम्बख्त ने। हमारी गाली को हवा कभी बुरा नहीं मानती है। यदि गुस्सा होकर सूरज धूम और रोशनी न दें, धरती अन्न न दे, हवा प्राण न दे, तो सोचिए हम लोगों की क्या हालत होगी। पर दुनियां उन्हें कितना ही भला बुरा कहे वे अपने धर्म को नहीं छोड़ सकते। उनके प्रेम तनिक भी अन्तर नहीं पड़ सकता, क्योंकि उनके प्रेम के पीछे किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं है। वे प्रेम इसलिए देते हैं कि बिना दिए रह नहीं सकते। यही है वास्तविक प्रेम। ऐसा प्रेम का वरदान विरलों को ही मिलता है पर जिन्हें मिलता है वे अपने को कृतार्थ बना देते हैं दुनियां को धन्य कर जाते हैं।

सच्चा प्रेम दुनियां की अनमोल वस्तु है। प्रेम भेदभाव नहीं करता, प्रेम निश्छल होता है। प्रेम तो बस प्रेम है उसे किसी परिभाषा में नहीं बांध सकते। असली प्रेम बड़ा पवित्र होता है। नकली प्रेम से सावधान रहने की बात संतों ने कही है रहीम कहते हैं -

ऐसा प्रेम न कीजिए, जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो मिले हुए अन्दर फाँके तीन॥

इसे प्रेम नहीं धोखा कहते हैं। ढाई आखर प्रेम के पढ़े सो पण्डित होय का मतलब हृदय की गहराई का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। सन्त हृदय नवनीत समान। अवारा बच्चे द्वारा आम के पेड़ पर मारा गया पत्थर आम गिराने के बजाय उधर विश्राम कर रहे गौतम बुद्ध का माथा लहूलुहान कर गया, यह दृश्य देख बच्चा मारे डर के थर-थर कांपने लगा, बुद्ध के आँखों से आंसू झरने लगे थे बच्चा क्षमा की मुद्रा में आ गया था, बुद्ध कहने लगे - मेरे आंसू चोट की वजह से नहीं निकल रहे थे प्रत्युत इसलिए निकल रहे कि तुम पेड़ पर पत्थर मारते हो तो वह तुम्हें फल देता है किन्तु मैं तुम्हें डर के सिवाय और कुछ नहीं दे सकता। इसी बात का मुझे दुख है- कितनी ऊँचाई है बात गहरी में ? महर्षि दयानन्द ने भी नहीं जान वैश्या के कहने पर दूध में जहर मिलाकर पिला देने वाले सेवक जगन्नाथ को दण्ड दिलाने के बजाय अपनी गांठ से ५०० रुपये निकाल कर देते हुए नेपाल भाग जाने का सुझाव दिया यह कैसा दया है ? कैसा प्रेम है प्राणी पर ?

आइए प्रेम के सच्चे अर्थ को समझ सभी से प्रेम करना सीखें और एक प्रेम करुणा व भाईचारा का वातावरण बनाकर समाज में खुशहाली लाने की एक छोटी सी कोशिश करें।

आर्यों का प्रबल संकल्प

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

भारतीय सनातन आर्यों का सबसे प्रबल एक शक्तिशाली वचन एवम् संकल्प है कि हम समस्त विश्व को आर्य बना दें। आर्य शब्द के अनेक अर्थ हैं जिसमें मुख्य अर्थ है - सभ्य। हम संसार के प्रत्येक प्राणी को सभ्य बना देना चाहते हैं। सभ्यता का अर्थ यदि आजकर का संचारव्यापी अर्थ सम्पन्न, व्याभिचार, तृष्णा, युद्ध तथा परस्पर वैमनस्य मान लें तो आप और हम और कोई भी ऐसा आचरण करता है, "सभ्य" नहीं है, अनादि है। विश्व में केवल आर्य धर्म ही ऐसा है, जिसने अध्यात्म, परलोक, मुक्ति आदि की व्यवस्था एवम् उपदेश तो दिया है, साथ ही उसे कर्त्तव्य की परिधि में भी आबद्ध किया है। स्वच्छंद जीवन अर्थात् मर्यादाहीन जीवन कोई जीवन नहीं है। संसार में अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुये मानव उस स्थिति में पहुंच जाता है कि वह कर्म से ऊपर उठ जाता है और कर्म उसमें लिप्त नहीं होते और न उसे कर्मफल की कोई लालसा रहती है। इस स्थिति को योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गीता के चतुर्थ अध्याय में इस प्रकार निर्दिष्ट किया है- न मां कर्माणि लिप्यन्ति न में कर्मफले स्पृहा। मुक्त व्यक्ति में न तो कर्म रह जाता है और उसका फल। आर्य धर्म ईश्वर पर तथा श्रुति, स्मृति, पुराण आदि पर निर्भर करता है और यह स्पष्ट निर्देश देता है कि अपना कर्त्तव्य करो, वहीं सब कुछ है। उदाहरणार्थ - परोपकार करना पुण्य है और दूसरों का उपकार करना पाप है। यही आर्य धर्म का सार है।

पवित्र पर्व

होली : भक्तों की विजय का पर्व

- डॉ. अजय आर्य

होली भक्ति की विजय का प्रतीक है। होली एक पावन पर्व है किन्तुइस पर अनेक कुप्रथाओं ने कब्जा कर लिया है। हम सभी को आज प्रहलाद को स्मरण करना चाहिए। हिरम्यकशिपू बनकर प्रहलाद को याद नहीं किया जा सकता। होली के पीछे छिपे अनेक रहस्यों को लेख उजागर करता है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार होली के संबंध में जो कहानी उपलब्ध है, उसके अनुसार हिरण्यकश्यप ने स्वयं को भगवान घोषित कर दिया था। भक्ति उसके राज्य में अपराध थी, पर भाग्य की विडम्बना देखिये। नास्तिक के घर आस्तिक ने जन्म लिया। प्रहलाद एक दिन खेलते-खेलते कुम्हार के घर पहुंचा। उसने देखा कि बिल्ली के कुछ बच्चे अलाव में छूट गये हैं। कुम्हार दम्पत्ति भगवान से प्रार्थना कर रहा है। पूरी रात प्रार्थना होती रही। सुबह दम्पत्ति ने अपने पके हुये घरे निकाले सभी घड़े पक चुके थे, सिर्फ बिल्ली के बच्चों वाला घड़ा कच्चा रह गया था। बिल्ली के बच्चे सुरक्षित निकले थे। इस चमत्कार को देखकर प्रहलाद दंग रह गया, उसे भक्ति की शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव हो गया था। प्रहलाद का अन्तस् बदल गया था। अनमना सा राजमहल में लौटा। उसे अपने पिता पर अश्रद्धा हो गई थी। वह भगवान की भक्ति में लीन रहने लगा। राजा को इस बात का पता चला। एक अहंकारी इस बात को कैसे स्वीकार कर सकता था कि उसका पुत्र ही उसके विरुद्ध हो। राजा ने उसे डराया धमकाया। प्रहलाद का मन विचलित न हुआ। जिसने भगवान की शक्ति को देख लिया, उसे दुनिया की झूठी ताकत कैसे विचलित कर सकती है। वेद कहते हैं कि भगवान ही सबसे बड़ा शक्तिशाली है। जो उसकी शक्ति को देख लेता है उसे दुनिया की कोई ताकत झूका नहीं सकती। प्रहलाद लाख समझानेपर भी न माना। अन्ततः उसे मारने का निर्णय लिया गया। कभी उसे झरने में फेंका गया, तो कभी उसे पागल हाथी के पास छोड़ा गया। उसे घनघोर घने जंगल में हिंसक पशुओं का शिकार बनने के लिए छोड़ दिया, किन्तु "जाके राखे साँईया मान सके न कोई॥"

झूठे अहंकारियों के लिये सत्य से भयानक कुछ नबीं नहीं है। सत्य हमेशा से राजा, महाराजा और प्रशासकों को डराता रहा है। सूकरात,मरा, गैलेलियो, महर्षि दयानन्द और आचार्य शंकर का अपराध क्या था ? सत्यावादी कभी भयभीत नहीं होता, पर सत्य से झूठ सदैव भयभीत होता है। प्रहलाद को न डरना था, वह न डरा। उस राजा ने हारकर उसे जिन्दा जलाने के निर्णय लिया। कहा जाता है कि होलिका के पास ऐसे वस्त्र थे जिसे आग में जलाया नहीं जा सकता था। आज विज्ञान ने भी ऐसे वस्त्र बना लिए हैं। राजा अपनी सत्ता में सभी को भयक्रान्त करना चाहता था। इसलिए इस जघन्यतम क्रूर दण्ड को सार्वजनिक करने का निर्णय लिया गया।

सारी प्रजा इस घटना को सांस रोककर देख रही थी। सबके मन में बस एक ही दुआ थीं कि प्रहलाद का बाल भी बांका न हो। सबकी सांसे थमी हुई थी। सब राजा के इस निर्णय के विरुद्ध थे, पर कहने का साहस किसी में नहीं था। सभी सांस रोके खड़े थे। होलिका ने अग्नि में प्रवेश किया। प्रहलाद ने प्रभु को स्मरण किया और ध्यान मग्न हो गया। लोग सारी रात वहीं खड़े रहे, सबके मन में बेचैनी थी। प्रभु की कृपा अद्भुत है। इस दंड के आयोजन में जिसे बचना था, वह मर गया, जिसे मरना था, वह बच गया। सुबह-सुबह प्रहलाद हंसता खेलता उठ खड़ा हुआ। लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा। सब उस जलती हुई चिता के पास दौड़े, किसी ने प्रहलाद को उठाया, किसी ने चिता की राख से तिलक किया, लोग नगाड़े बजाने लगे, अबीर उड़ाया गया, झूमते नाचते गाते प्रभु के गीत गाये गये। प्रहलाद को गोद में उठा लिया गया। भक्तों की मण्डली ने अपना विजय जुलूस निकाला और होली की शुरुआत हुई। वस्तुतः होली भक्तों की विजय का पर्व है। होली भक्ति के आनन्द का पर्व है।

पता : जेन-१२, गणपति विहार, बोरसी, दुर्ग (छ.ग.)

नव वर्षाभिनन्दनम्

चैत्रे मासि जगद्ब्रह्म ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् : चैत्र शुक्ल के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्म ने जगत् की रचना की।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

की ओर से

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसम्वत्सर एवं

आर्यसमाज स्थापना दिवस

के पावन अवसर पर समस्त प्रदेशवासियों एवं सुधि पाठकों को

हार्दिक शुभकामनायें।

प्रधान
आचार्य अंशुदेव आर्य

मंत्री
दीनानाथ वर्मा

कोषाध्यक्ष
जोगीराम आर्य

सर्वे भवन्तु सुखिनः सुहृदो मदीयाः,
सम्प्राप्य कीर्तिमतुलाञ्निजकर्मजाताम्।
स्वस्थाभवन्तु शुभकर्मफलानि लब्ध्वा,
लाभप्रदो भवतु वो नव वत्सरोऽयम्।।

शुभाकांक्षी
आचार्य कर्मवीर
सम्पादक, अग्निदूत

बलिदानी शौर्य को नमन

मातृभूमि को दिलाने मुक्ति जो कमाया नाम
बलिदानी शौर्य की कमाई को नमन है,
वरमाल की बजाय फांसी को गले में डाला
आजादी के युद्ध के जमाई को नमन है,
जिसने अमर क्रान्ति ज्वाल को जन्म दिया
पुण्य कोख वाली ऐसी माई को नमन किया,
इंकलाब जिन्दाबाद वाले घोष को नमन
भगत की क्रान्ति-तरुणाई को नमन है।

जिनके लहू ने रचा क्रान्ति वाला इतिहास
जलियांवाले बाग के वीरों को नमन है,
शान्ति औ अहिंसा के विचारों को नमन है,
आजादी की डोली के कहारों को नमन और
लाला जी की पीठ के प्रहारों को नमन है,
तुम मुझे खून दो औ मैं तुम्हे आजादी दूंगा
दिल्ली चलो वाली ललकारों को नमन है।

हमको उजाला देते-देते जो बुझे हैं, उन
दीपकों की पावन कतारों को नमन है,
मातृ-वंदना के गीत-गाते चूम लिए
उन फांसी वाले पुण्य हारों को नमन है,
बलिदानी स्वरों की पुकारों को नमन मेरा
कोल्हुओं से बही तेल धारों को नमन है
क्रांतिकारियों ने जहाँलिखा वन्दे मातरम्
सेल्यूलर जेल की दीवारों को नमन है।

- गजेन्द्र सिंह सोलंकी

नवसम्वत् हो मंगलकारी

नव संवत् हो मंगलकारी, जन जन में आये सद्बुद्धि।
परहित के भावों की मन में, सहसा हो अभिवृद्धि॥

मंगलमय हो नव संवत्सर, मंगलमय हो घर आंगन।
मंगलमय हो इस धरती का, सत्य-शिव-सुन्दर कण कण॥

आज हमारे अन्तस्थल में प्रेम भाव हो पुनः प्रदीप्त।
करुणा क्षमा सहिष्णुता से, अर्न्तमन हो फिर उदीप्त॥

भाव शत्रुता के मिट जाये, उर में जागे मित्र भावना।
पूर्ण सदा हो मानव मन की इच्छा के अनुकूल कामना॥

राम कृष्ण की, दयानन्द की परम्परा हो फिर जीवित।
करें परस्पर स्वच्छ हृदय से, एक दूसरे का हम हित॥

मिटे नये इस संवत्सर में, फैला जो अन्याय अनय।
सभी दिशायें हो मंगलमय, जन जन हो वसुधा पर निर्भय॥

मानवता के मंगलकारी पथ पर ही अब बढ़े चरण।
सच्चरित्रता का ही हम सब, जीवन पथ पर करें वरण॥

भ्रष्टाचार मिटे, जिसने है किया राष्ट्र को अब अक्रान्त।
जागृति का नवमंत्र मिले अब, जागे मानव मन उद्भ्रान्त॥

रुदन मिटे इस वसुन्धरा का छा जाये कुल हर्षोल्लास।
स्वार्थवाद को दे तिजाञ्जलि, जगे धरा पर नूतन आश॥

मानवता की जय का डंका बजे पुनः भूमंडल पर।
जन जन हित की मंगलकारी, आया यह नववर्ष संवत्सर॥

प्रणेता
स्व. राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर (उ.प्र.)

धर्मवीर पंडित लेखराम

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

ऋषियों, महात्माओं तथा महापुरुषों की पवित्र जीवनियों का अवलोकन करने से भलीभांति विदित होता है कि उनका जीवन सफल था। सफल जीवन के लिए जिन उत्तम साधनों की परमावश्यकता प्रतीत होती है वह पूर्ण रूपेण उनके जीवन में सम्यकता उपलब्ध होते हैं।

६ मार्च पुण्य तिथि पर विशेष

वैदिक धर्म के प्रति अनन्य निष्ठा रखकर धर्म प्रचार, लेखन, शास्त्रार्थ, शुद्धि तथा विविध कार्यों में जीवन समर्पित कर देने वले पं. लेखराम जैसे धर्मवीर, आर्य जाति के इतिहास में बहुत कम देखने में आते हैं। इनका जन्म १९१५ विक्रमी में जेहलम जिले के एक ग्राम सय्यदपुर में महता तारासिंह नामक ब्राह्मण के यहां हुआ।

बाल्यकाल में उनका अध्ययन फारसी तथा उर्दू के माध्यम से हुआ। यही भाषाएँ उन दिनों पंजाब में पढ़ाई जाती थीं। सामान्य शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् वे सत्रह वर्ष की आयु में पुलिस में भर्ती हो गए। इस विभाग में उन्नति करते-करते वे सार्जेंट के पद तक पहुंच गए। इन्हीं दिनों इनका झुकाव धर्म एवं अध्यात्म की ओर हुआ। वे गीता का नियमित पाठ करते तथा अद्वैतवाद की दार्शनिक विचारधारा का लगातार चिन्तन करते। उन्हें पंजाब के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी विचारक मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के ग्रन्थों को पढ़ने का भी अवसर मिला। फलतः उनके विचारों में परिवर्तन आया। अब वे ऋषि दयानन्द की विचारधारा से परिचित हुए। १९३७ वि. में पेशावर में उन्होने आर्यसमाज की स्थापना की थी। अब उन्हें वैदिक धर्म के विषय में अधिक जानने की इच्छा हुई एक मास का अवकाश लेकर वे ऋषि दयानन्द से भेंट करने के लिए अजमेर जा पहुंचे। उन्होने स्वामी जी के चरणों में सिर नवाया और अनेक जिज्ञासाएँ प्रस्तुत की। जब स्वामी जी महाराज ने इस युवक के सभी प्रश्नों का सम्मानजनक उत्तर दे दिया, तब पं. लेखराम संतुष्ट मन से स्वस्थान पर लौट आए। स्वामीजी ने इस समय उनसे यह भी प्रतिज्ञा कराई कि पच्चीस वर्ष से पूर्व वे हरगिज विवाह नहीं करेंगे। पं. लेखराम ने गुरुवर के इस आदेश को निभाया।

पं. लेखराम अब सर्वात्मना धर्मप्रचार में जुट गए। उन्होने धर्मोपदेश नामक एक उर्दू मासिक निकाला। उसमें उच्च कोटि के लेख लिखने लगे। उन दिनों पंजाब में मुसलमानों के एक नये फिर्के अहमदिया सम्प्रदाय (कादियानी) का जोर था। इसके संस्थापक मिर्जा गुलाम अहमद स्वयं को पैगम्बर बताने लगे थे। उनके अनुयायियों की संख्या भी बढ़ रही थी। यद्यपि पं. लेखराम पुलिस सेवा में रहते हुए भी धर्मप्रचार के लिए पर्याप्त समय देते थे, किन्तु १९४० वि. में स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् उन्होने अनुभव किया कि अब सरकारी नौकरी और धर्मप्रचार दोनों साथ साथ नहीं चल सकते। अतः उन्होने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और धर्मोपदेश को ही अपने जीवन का एकमेव लक्ष्य बनाया।

पं. लेखराम ने अहमदिया सम्प्रदाय और उसके स्वयंभु पैगम्बर को आलोचना का लक्ष्य बनाया। इस सम्प्रदाय की मान्यताओं के खण्डन में उन्होने अनेक ग्रन्थ निकाले। 'तकजीब बुराहीन अहमदिया' और 'नुस्खा खब्त अहमदिया' आदि पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय हुई। मुसलमानों ने भी कादियानियों की मिथ्या बातों तथा कपोल कल्पनाओं को समझना आरम्भ किया।

जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का विधिवत गठन हुई तो पं.लेखराम उसके उपदेशक बन गए। सभी की ओर से विभिन्न स्थानों पर प्रचारार्थ जाने लगे। उनकी प्रवृत्तियां बहुआयामी थीं। उन्होने 'आर्यगजट' का सम्पादन किया। विधर्मियों से शास्त्रार्थ किये, हिन्दू धर्म को छोड़कर या इस्लाम

ग्रहण करने वालों को स्वधर्म में रहने के लिए मनाया। जहां जहां से उन्हें प्रचारार्थ बुलाया गया, वहां वहां जाकर उन्होंने लोगों को वैदिक धर्म के तत्वों को समझाया।

इनके अतिरिक्त पं. लेखराम सुयोग्य लेखक भी थे। उन्होंने भारतीय इतिहास, ईसाई तथा इस्लाम धर्म के मूल तत्वों तथा मान्यताओं का विशद अध्ययन किया था, सैमेटिक मतों के मान्य ग्रन्थों का गम्भीर अनुशीलन किया था। इन मतों के वे अधिकृत विद्वान् समझे जाते थे। इसी बीच आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने एक प्रस्ताव स्वीकार कर, ऋषि दयानन्द का विस्तृत एवं प्रामाणिक जीवन चरित्र लिखवाने का निश्चय किया। इस कार्य को आरम्भ करने के पूर्व यह आवश्यक कि ऋषि जीवन विषयक सभी तथ्यों एवं जानकारियों को एकत्र किया जाता। यह गुरुवर कार्य पं. लेखराम के ही सुपुर्द किया गया। सभा के आदेश को शिरोधार्य कर पं. लेखराम जी स्वामी दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित सामग्री का संकलन करने के लिए देश के विभिन्न भागों में गए। प्रत्यक्षदर्शियों से मिलकर, आवश्यक सूचनाएँ एकत्र करने के अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि पत्रों में प्रकाशित ऋषि दयानन्द सम्बन्धी संदर्भ सूचनाओं तथा लेखों को भी एकत्र किया।

इस बहुत संग्रह कार्य को पूरा करने के पश्चात् वे लाहौर आए और जीवनी लेखन का कार्य आरम्भ किया। यह दुर्भाग्य ही था कि असमय में बलिदान मार्ग को पथिक बन जाने के कारण, पं लेखराम की लौह लेखनी से, आचार्यप्रवर का वह विशद जीवनचरित नहीं लिखा जा सका। कालान्तर में पंजाब सभा के प्रधान लाला मुन्शीराम के आदेश से पं. आत्माराम अमृतसरी ने पं. लेखराम द्वारा संगृहीत सामग्री के आधार पर ही इस वृहद् ग्रन्थ को उर्दू में लिखकर पूरा किया।

१९५० विक्रमी में जब उनकी आयु ३५ वर्ष की थी, उन्होंने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया और कुमारी लक्ष्मी को अपनी सहधर्मिणी बनाया। उनके एक पुत्र हुआ जो अधिक आयु नहीं पा सका। पं. लेखराम की यह विशेषता थी कि जहां और जिस समय उनकी परिस्थिति की आवश्यकता महसूस की जाती वे अन्य सभी कामों को छोड़कर वहां पहुंच जाते। ऐसा करते समय उन्हें न तो निजी सुविधाओं की ही चिन्ता रहती, न वे यात्रा की कठिनाइयों का ही ख्याल करते। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि जोधपुर के प्रशासक महाराजा प्रतापसिंह, स्वामी दयानन्द के आद्य शिष्य पं. भीमसेन शर्मा को अपने यहां बुलाकर मांस भक्षण के समर्थन में उनसे कोई व्यवस्था लिखवाना चाहते हैं, तब पं. लेखराम अविलम्ब जोधपुर पहुंचे। उन्होंने पं. भीमसेन को स्पष्ट कह दिया कि यदि उसने लोभ या दबाव में आकर मांस के समर्थन में कोई व्यवस्था दे दी, तो उसे आर्यसमाज की वैदी पर खड़े होने से भी वंचित कर दिया जाएगा और उसकी प्रतिष्ठा धूल में मिल जायेगी।

बूंदी में जब आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी नित्यानन्द और स्वामी विश्वेश्वरानन्द का पौराणिक विद्वानों से शास्त्रार्थ होने लगा, तब उनकी सहायता के लिए पण्डितजी को भेजा गया। इस अवसर पर उन्होंने भीलवाड़ा जिले के जहाजपुर कस्बे में, मुहम्मदी मत की आलोचना में एक तर्कपूर्ण व्याख्यान किया। साधु केशवानन्द नामक एक पौराणिक साधु से शास्त्रार्थ करने के लिए वे हिमाचल प्रदेश के नाहन नगर में गए और वहां पर आर्यसमाज की स्थापना की।

स्वधर्म को त्यागकर, किसी अन्य मत की दीक्षा लेने के लिए तत्पर लोगों को बचाने के लिए पं. लेखराम सदा सजग रहते थे। जब उन्हें पता चला कि पटियाला रियासत के एक गांव पायल में कोई हिन्दु अपना मत त्यागकर अन्य मत में दीक्षित हो रहा है, तो वे बिना इस बात का विचार किये कि अमुक रेलगाड़ी उस स्टेशन (बाबा पायल) पर ठहरती भी है या नहीं, द्रुतगति रेल में सवार हो गए। जब गाड़ी पायल स्टेशन होकर गुजरने लगी तो लेखराम ने अपना बिस्तर चलती गाड़ी से बाहर फेंका और स्वयं भी कूद गए। उन्हें इस बात की थोड़ी भी चिन्ता नहीं हुई कि उनके शरीर को क्षति पहुंची है। वे तुरन्त स्वधर्म त्याग के लिए तत्पल उस व्यक्ति के निकट पहुंच गए और उससे पूछने लगे कि उसने क्या सोचकर धर्म परिवर्तन का निश्चय किया है ? जब उक्त व्यक्ति को पता चला कि पं. लेखराम तो अपने शरीर पर चोटों को झेलकर केवल उसे बचाने के लिए ही

आए हैं, तब उसने परमत-प्रवेसश का अपना संकल्प त्याग दिया। पं. लेखराम जितने उत्तम वक्ता उपदेशक और शास्त्रार्थकर्त्ता थे उसी भांति उच्च कोटि के लेखक भी थे। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या ३३ है, जो कुलियात आर्य मुसाफिर नामक वृहद ग्रन्थ में संग्रहित है। इनके एकाधिक अनुवाद हिन्दी में भी हुए हैं। जब १८९७ के वर्ष में पं. लेखराम लाहौर में अपने निवास में रहकर दयानन्द जीवन लेखन का कार्य कर रहे थे, उनके प्राणहरण की चेष्टा सफल हुई। जब वे दिन भर के लेखन कार्य से थककर अंगड़ाई लेते हुए उठे, तो एक काले गठीले तथा हिंसक प्रवृति के पुरुष ने उनकी छाती तथा पेट में छुरे से घातक प्रहार किये। इस आकस्मिक प्रहार से पं. लेखराम के शरीर से खून की धाराएं बह निकली, अंतड़ियां भी बाहर आ गई। उन्हें तुरन्त अस्पताल पहुंचाया गया।

जीवन के इन अंतिम क्षणों में भी ईश्वर-विश्वासी लेखराम परमपिता का निरन्तर स्मरण करते रहे। उस समय आर्यसमाज के मूर्घन्य नेता लाला मुन्शीराम भी उनकी मृत्यु शैया के निकट उपस्थित थे। इस समय अमर हुतात्मा श्री लेखराम ने आर्यजाति को अपना अन्तिम संदेश देते हुए कहा कि आर्यसमाज में तहरीर (लेखन) तथा तकरीर (व्याख्यान) का काम कभी बंद नहीं होना चाहिए। मर्म स्थलों पर लगे प्रहारों ने उनके जीवन की आशा को समाप्त कर दिया। ६ मार्च १८९७ की रात्रि को इस अमर धर्मवीर का धर्म की वेदी पर बलिदान हो गया। धर्म और सत्य के लिए स्वयं को होम देने वाले पं. लेखराम जैसे सर्वस्य स्वामी पुरुष ही मानवता के प्रकाश स्तम्भ है।

भाग्य और पुरुषार्थ का अन्तर्द्वन्द्व

नेता यस्य बृहस्पतिः प्रहरणं वज्रं सुराः सैनिकाः, स्वर्गोदुर्गमनुग्रहः किलहरेरैरावतो वारणः।
इत्याश्चर्य्यबलान्वितोऽपि बलभिद्गतः परैः सङ्गरे, तद्युक्तं वरमेव दैवशरणं धिग्धिग्वृथा पौरूषम्॥

(राजशेखर)

भावार्थ :- इस संसार में अनन्तपथ पर सृष्टि के प्रारंभ से ही भाग्यश्री और पुरुषार्थी का अन्तर्द्वन्द निरन्तर चला आ रहा है। एक की हार दूसरे की जीत ? कैसी विचित्र विडम्बना है - यह भी ? संस्कृत साहित्य के कविवर महाविज्ञान राजशेखर ने उपर्युक्त अर्न्तद्वन्द का जिस व्यङ्गात्मक रुप से वर्णन किया है - वह अद्वितीय है। देखिए -इन्द्र के प्रति सम्बोधित कर कवि कहते हैं :- सम्राटों का सम्राट् वह इन्द्र कैसा प्रभुत्ववाला रहा है- जिसके नेता बृहस्पति महाराज है। वृहस्पति की जिस पर कृपा हो उसे किस बात की न्यूनता हो सकती है, किसी बात की नहीं, और प्रहारकर्त्ता वज्र जिसका शस्त्र हो, देवता लोग जिसके सैनिक हों, स्वर्गरुपी किला जिसके रहने का घर हो, हरि की कृपा भी जिस पर अपार हो ऐरावत हाथी जिसके चलने के लिए सवारी हो, भला किसी बात का अभाव है - इन्द्र को, किसी बात का भी तो ....नहीं ? पुनरपि अत्यन्त आश्चर्य है कि - इतनी बलयुक्त सामग्रियों साधनों से युक्त सुरक्षित होकर भी इन्द्र युद्ध में शत्रुओं से प्रायः हारता ही रहा। कारण क्या है? कविवर कहते हैं कि - भाग्य के आगे पुरुषार्थ की दौड़ भी ठप्प हो जाती है। वास्तव में भाग्य की शरण ही समुचित है। कितना भी पुरुषार्थ क्यों न किया जाए परन्तु दैव की गति के आगे पुरुषार्थ की कुछ चलती ही नहीं है। पुरुषार्थ तुझे धिक्कार है - धिक्कार है।

- सुभाषित सौरभ

मांसाहार में दस व्यक्तियों को पाप लगता है :- अभक्ष्य पदार्थ अर्थात् मांसादि के व्यापार में दस प्रकार के लोगों को पाप लगता है - वे हैं :- (१) शिकार करने की सलाह देने वाला (२) शिकार करने वाला (३) मुर्दा पशु को बेचने वाला (४) मुर्दा पशु को काटने वाला (५) पशु के मांस को बेचने वाला (६) पशु के मांस को बेचने वाला (७) मांस को खरीदने वाला (८) मांस को पकाने वाला (९) अभक्ष्य पदार्थ को परोसने वाला (१०) अभक्ष्य पदार्थ को खाने वाला।

प्रेरणात्मक

प्रेमचंद का शनिश्चरी किस्सा

- डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, (संस्कृत के प्रख्यात कवि व्यंग्यकार एवं कथा लेखन)

सम्पादकीय टिप्पणी

उत्तरप्रदेश के जिला प्रतापगढ़ स्थित कालांकाकर रियासत के तत्कालीन राजकुमार श्री सुरेशसिंह जी की अपने बड़े भाई एवं कालांकाकर के राजा श्रीयुत् अवधेशसिंह के साथ हिन्दी के प्रख्यात कथाकार एवं उपन्यास लेखक मुंशी प्रेमचन्द के साथ सन् १९२८ में जो मुलाकात हुई थी उसका एक रोचक एवं सत्रीय चित्रण हिन्दी की प्रख्यात मासिक पत्रिका कादम्बिनी के जुलाई १९७० के अंक में प्रकाशित हुआ था। ज्ञातव्य है कि कालांकाकर के समीपस्थ ही जिला सुलतानपुर की अमेठी रियासत भी है जिसमें राजा रणञ्जयसिंह एवं उनके पूर्वज भी आर्यसमाज से बहुत प्रभावित थे। राजा राणञ्जयसिंह तो वर्षों तक उ.प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी रहे हैं। कालांकाकर के राजा अवधेश सिंह द्वारा प्रदत्त जमीन पर ही आर्यसमाज प्रतापगढ़ आज भी स्थापित है। इस प्रकार ये दोनों राजपरिवार आर्यसमाज के सिद्धान्तों एवं मान्यताओं पर प्रगाढ़ निष्ठा रखते थे। हिन्दी के महान् लेखक मुंशी प्रेमचन्द के लेखन पर भी आर्यसमाज की तार्किकता, स्वराज्य-भावना तथा कुरीतियों एवं पाखण्डों के निवारण करने वाली विचार धारा का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। प्रगतिशील विचारधारा के कारण ही उन्होंने अपना विवाह आर्यसमाज बुलानाला (वाराणसी) में एक विधवा के साथ बड़े ही सादगी से किया था। अस्तु, आर्यसमाज के महोपदेशक एवं प्रसिद्ध संस्कृत लेखक डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री ने हिन्दी की सुप्रसिद्ध पत्रिका कादम्बिनी में लगभग पचास वर्ष पूर्व प्रकाशित यह विवरण हमें उपलब्ध कराया है। हम डॉ. शास्त्री को धन्यवाद देते हुए यह विवरण अविकल प्रकाशित कर रहे हैं। इसे पढ़कर आप जान सकेंगे कि कैसे आज भी शनिश्चर आदि ग्रहों की पूजा एवं उनका भय दिखाकर पण्डे पुजारी सामान्य जन को लूटते रहते हैं तथा अन्धविश्वासी लोग इनके फेर में पड़कर दुःख प्राप्त करते हैं।

- सम्पादक

प्रेमचन्द जी के प्रथम दर्शन मैंने सन् १९२८ या २९ में किए। तब वे लखनऊ में गणेशगंज मोहल्ले में रहते थे। मेरे पूज्य भाई स्व. राजा अवधेश सिंह कालांकाकर को साहित्य में अधिक रुचि तो नहीं थी, लेकिन उन्हें श्री मैथिलीशरण गुप्त की भारत-भारती और प्रेमचन्द जी की कहानियां बहुत पसंद थी। पंच-परमेश्वर कहानी तो वे हम लोगों को न जाने कितनी बार सुना चुके थे।

लखनऊ में वे अक्सर प्रेमचंद जी से मिलने उनके घर जाते थे। एक बार मैं भी उनके साथ गया और उस महान् साहित्यकार के दर्शन किए। उस समय वहां अन्य सज्जन भी बैठे थे। हम लोग भी उस गोष्ठी में सम्मिलित हो गए और इधर-उधर की बातें होने लगीं। उसी समय एक पंडित जी हाथ में तेल भरा कटोरा लिए आए, जिसमें लोहे के शनिश्चर भगवान की मूर्ति आकंठ डूबी थी। वे प्रत्येक दरवाजे पर जाकर शनिश्चर भगवान के आगमन की सूचना देकर लोगों से पैसे वसूल कर रहे थे। प्रायः प्रत्येक घर से स्त्रियां उन्हें कुछ-न-कुछ दे रही थीं।

मेरे भाई साहब कट्टर आर्यसमाजी थे। अतः उन्होंने प्रेमचंद जी से कहा - ***आपने शनिश्चर भगवान को कुछ अर्पित नहीं किया, कहीं वे खफा न हो जाएँ।*** प्रेमचंद जी बोले, मेरा शनिश्चर भगवान क्या करेंगे ? आपको इसी संबंध में एक किस्सा सुनाता हूँ। एक सज्जन के ग्रह खराब थे। साढ़े साती शनिश्चर का प्रकोप था। लोगों ने उन्हें सलाह दी कि ये किसी पंडित से शांति का उपाय पता करें।

वे एक पंडित जी के पास गए और अपनी सारी दुःख गाथा सुनाई। पंडित जी ने यह सोचकर कि अच्छी

आसामी है, कहा - ***इसमें तो काली वस्तु का दान लिखा है। गज-दान से आपका संकट टल जाएगा।*** उन्होंने कहा, अरे महाराज ! गज-दान तो मेरी सामर्थ्य के बाहर की बात है। कुछ ऐसा बताइए जो मैं कर सकूँ।

पंडित जी ने कहा - तो कौसतुभ मणि, नीलम मणि- ऐसी ही किसी मणि का दान करो। वे इसके लिए भी तैयार न हुए तो पंडित जी ने विचार करके कहा, तो एक भैंस दान कर दो। संकट टल जाएगा। लेकिन भैंस देने के लिए भी यजमान राजी नहीं हुआ।

पंडित जी ने फिर कुछ सोचकर कहा, तब ऐसा करो कि एक बोरा उड़द का दान कर दो, संकट दूर हो जाएगा। लेकिन उसके लिए एक बोरा उड़द देना भी संभव नहीं था।

पंडित जी ने कहा, तब एक काली कमली का प्रबंध करो। लेकिन काली कमली भी आजकल पंद्रह बीस रुपये से कम में नहीं आती, अतः उन्होंने इससे भी इन्कार कर दिया। पंडित जी का धैर्य टूट रहा था, लेकिन वे अपने यजमान को छोड़ना नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने कहा, तो लोहे की एक छुरी का ही दान कर दो। लेकिन लोहे की छुरी मुफ्त में तो मिलती नहीं, उसमें भी डेढ़-दो रुपये लगते ही हैं। यजमान ने उसके लिए भी अपनी असमर्थता प्रकट की। पंडित जी झुंझलाकर बोले, तो थोड़ा कोयला ही लाओ और उसी का दान करो। यजमान उसके लिए भी तैयार नहीं हुआ। कोयले में भी तो कुछ पैसे लगेंगे ही। अब पंडित जी का धैर्य टूट गया। उन्होंने खीझकर कहा, तो फिर क्यों बेकार में इतना परेशान हो रहे हो ? जाकर आराम से अपने घर बैठो। जब तुम थोड़ा-सा कोयला भी नहीं दे सकते तो तुम्हारा एक-दो क्या, सैकड़ों शनिश्चर भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इतना कहकर प्रेमचंद जी बोले, राजा साहब मेरी भी हालत उसी आदमी की तरह है। मेरा भला शनिश्चर क्या बिगाड़ेंगे ? आप आर्यसमाजी हैं, आपको भी कुछ डर नहीं है। उनसे तो धनवानों को डरना चाहिए। उनके द्वारा बताई इस रोचक कथा के कारण उनका प्रथम दर्शन आज भी मेरी स्मृति में ताजा बना हुआ है।

पता: बी-२९, आनन्द नगर, (जेल रोड) रायबरेली (उ.प्र.)

विडम्बना

पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव

नई सदी से मिल रही, दर्द भरी सौगात।
बेटा कहता बाप से, तेरी क्या औकात ॥

०

पानी आँखों का मरा, मरी शर्म और लाज।
कहे बहू अब सास से, घर में मेरा राज ॥

००

भाई भी करता नहीं, भाई पर विश्वास।
बहन पराई हो गई, साली खासमखास ॥

०००

मंदिर में पूजा करें, घर में करें क्लेश।
बापू तो बोझ लगे, पत्थर लगे गणेश ॥

००००

बच्चे कहाँ अब शेष है, दया, धरम, ईमान।
पत्थर के भगवान हैं, पत्थर दिल इन्सान ॥

०००००

पत्थर के भगवान को, लगते छप्पन भोग।
मर जाते फूट-पाथ पर, भूखे प्यासे लोग ॥

०००००००

पहना मुखौटा धर्म का, करते दिन-भर पाप।
भंडारे करते फिरें, घर में भूखा बाप ॥

०००००००

पता: - ऋषि कुमार आर्य, वेद विभूषण *आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)*

**भजन करते हुए प्रभु का मन मीरा सा हो गया,
साँवरा आ खड़ा सामने, मन प्रफुल्लित हो गया।**

मेरे परम मित्र : आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी

पुण्य स्मरण

- महात्मा चैतन्यस्वामी

२७ सितम्बर १९४९ के दिन सम्पन्न सोनी परिवार में बीकानेर राजस्थान में माता श्रीमती पार्वतीदेवी और पिता श्री द्वारिकादासजी के यहां एक बालक ने जन्म लिया। बालक बचपन से ही अपने पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण इतना वैरागी वृत्ति का था कि जैन कालेज से एम. काम. करने के बाद अचानक एक दिन घर से निकल पड़ा। यही बालक आगे चलकर आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य के नाम से यशस्वी हुआ। यह एक अच्छी बात थी कि अपने शिक्षाकाल में ही उसका सम्पर्क एक आर्य विचारधारा के सज्जन पंडित ठाकुर प्रसाद आर्यजी से हो चुका था। आर्यजगत् की विभूति योगनिष्ठ स्वामी सत्यपति जी महाराज से सम्पर्क होना इनके जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि है। उन्हीं की प्रेरणा से इन्होने गुरुकुल कालवा के आचार्य बलदेव जी से व्याकरण महाभाष्य का अध्ययन किया। गुरुकुल कांगड़ी के उप कुलपति प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार से निरुक्त पढ़ा तथा लगभग १९८६ में स्वामी सत्यपति जी महाराज से विधिवत् दर्शनों का अध्ययन किया। स्वयं दर्शनों का अध्ययन करने के बाद इन्होने रोजड़ में ही दर्शन योग महाविद्यालय में दर्शनों का ज्ञान देकर अनेक सुयोग्य आचार्य समाज को दिए।

कालान्तर में जब वानप्रस्थ साधक आश्रम की परिकल्पना को साकारता देने का अवसर जो आचार्यजी ने अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य से इस आश्रम के लिए स्वयं को आत्मना समर्पित कर दिया और भव्य आश्रम का निर्माण किया। आज साधक आश्रम का जो भी स्वरुप हम देखते हैं इसके पीछे आचार्यजी का अथक परिश्रम और प्रतिभा ही है... जहां उन्होने दर्शन महाविद्यालय के माध्यम से संसार को सुयोग्य आचार्य दिए वहीं वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार के अद्‌भुत कार्य किए। सैकड़ों ही योगशिविरों का आयोजन किया। साहित्य प्रकाशन की दिशा में भी उन्होने महत्वपूर्ण कार्य किया है जिससे गुजराती भाषा में अनेक पुस्तकें तथा कुछ वेदभाष्य भी उल्लेखनीय है... योग और आध्यात्म विषयों पर अनेकशः पुस्तकें प्रकाशित की। सैकड़ों फोल्डर, चार्ट, कलैण्डर, पत्रक आदि छपवाकर निःशुल्क वितरित किए। योगेश्वर श्रीकृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी के कलैण्डर छपवाकर तथा प्राचीन ऋषि मुनियों के चित्र एवं परिचय खोजकर और छपवाकर इन महापुरुषों की सही-सही पहचान प्रचलित कराई। अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण करके उसके माध्यम से यज्ञ का प्रशिक्षण देकर सैकड़ों ही लोगों को प्रतिदिन यज्ञ करने के लिए प्रेरित किया, अनेक नगरों में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए। युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण शिविर आयोजित किए। इसके अतिरिक्त वैदिक आध्यात्मिक न्यास तथा विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास द्वारा भी अनेकशः सार्थक कार्य किए। विचार टी.वी. को सक्रियता देना भी इनका एक महत्वपूर्ण कार्य है। लगभग अट्ठारह बार इन्होने विदेश में भी प्रचार किया।

हमसे उनका सम्पर्क लगभग १९८०-८१ से हो रहा है वे गृह त्याग कर आए। उस समय के तथा बाद के भी अनेकों संस्मरण है जो हमारे व्यक्तिगत अधिक है। उनमें से कुछ का कहीं अन्यत्र या अपनी आत्मकथा में लिखने का प्रयास करूंगा। अंतिम दिनों तक हमारे एवं हमारे परिवार के साथ उनकी वैसी ही आत्मीयता रही... सत्यप्रियायति जी में वे अपनी मां की छबि देखा करते थे.. वे सभी के साथ मुझे अपना विश्वसनीय, अभिन्न एवं परम मित्र कहा करते थे। १९८३ से लेकर उनके साथ निरन्तर पत्र-व्यवहार भी होता रहता था। आज भी मेरी फाईल में हमारी आत्मीयता की थाती है। वे जो भी कार्य करते थे या करना चाहते थे। मुझसे विस्तार के साथ चर्चा करते थे। अपने हर अच्छे कार्य व उनमें आए संघर्षों की मुझसे खुलकर चर्चा

करते थे। यह उनका बड़प्पन ही था कि मुझे वे अपना भगवान कहा करते थे... मेरी सम्पत्ति को अक्षरशः मानते थे... जब हमारे यहां रहे थे तो हमारे पैतृक गांव भी गए थे। उन दिनों हम आश्रम के लिए कोई उपयुक्त स्थान देखना चाहते थे (आचार्य जी, वैद्य हंसराज ची और मैं एक साथ ही कार्य करना चाहते थे) हालांकि अंतिम दिनों तक उनका हमारे परिवार के साथ अत्यधिक स्नेहिल सम्बन्ध बना रहा मगर उन दिनों संभवतः उनकी वृत्ति में कुछ व्यवधान पैदा हुआ होगा। अतः वे अपने दिनांक २४ अगस्त १९८३ के पत्र में लिखते हैं - विगत डेढ़ दो वर्षों में पहली बार किसी परिवार में वास किया और घर जैसी स्थिति बन गई, विशेषकर बहिन जी को देखकर अपनी माता की। अब भी जब आपकी स्मृति किसी कार्यवशात् आती है तो सत्यप्रियजी को तो याद करते ही घर की माता आंखों के आगे उपस्थित हो जाती है। संभव है भविष्य आपके घर न आऊँ...। इसी पत्र में उन्होंने रिवालसर के आस-पास जो स्थान हमने आश्रम के लिये देखे, उनके बारे में भी लिखा है कि आप स्वयं चयन कर लें मगर वहां तक गाड़ी जाती हो आदि ...।

कुछ पत्रों में सुन्दरनगर में शिविर आदि लगाने के बारे में चर्चा की गई है... (कालान्तर में हमने पूज्यपाद स्वामीजी महाराज के शिविर लगाए भी थे) दिनांक १-७-१९८७ के पत्र में षड्दर्शन एवं योग प्रशिक्षण शिविर के सम्बन्ध में विस्तृत ब्यौरा दिया था तथा क्योंकि हमारी अपने तीनों ही बच्चों को ब्रह्मचारी रखकर वैदिक धर्म का विद्वान बनाने की कामना था। अतः इस पत्र में उन्होंने उसी सम्बन्ध में चर्चा की थी। इधर हम, विशेषतः सत्यप्रियाजी तो पहले ही तीनों बेटों को ब्रह्मचारियों के रुप में वैदिक विद्वान् बनाने का संकल्प लिए हुए थे अतः हमने बड़े बेटे अखिलेश भारतीय जी के बारे में उनसे चर्चा की... वि. सम्वत् २०४५ में लिखे पत्र में उन्होंने विस्तार से बताया कि श्री अखिलेशजी को अलग से संस्कृत आदि का प्रशिक्षण देकर बाद में प्रवेश दिलाया जायेगा। उसे क्या-क्या सामान आदि लाना है इस संबंध में भी दिशा निर्देश था। दिनांक ८-४-८७ को पुनः प्रेरणात्मक एक लम्बा पत्र आया तथा उसमें बताया गया था कि यहां रोजड़ में एक योजना बन रही है जिसमें तीन वर्ष का एक कार्यक्रम बनाया जाएगा। इस काल में ६ दर्शन तथा वैदिक सिद्धान्तों के साथ-साथ उच्चस्तर का योगाभ्यास का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। दिनांक १०-१०-८८ को मैंने स्वामी सत्यपतिजी को पत्र लिखा जिसमें तीनों बच्चों को वैदिक विद्वान् बनाने के बारे में लिखा तथा वर्तमान में बड़े बेटे अखिलेश के लिए जो उस समय बी.एस.सी. में पढ़ रहा था, प्रवेश हेतु प्रार्थना की.. हमें जब स्वीकृति मिल गई तो हमें अत्यधिक प्रसन्नता हुई तथा २६-१०-८८ को हमने एक पत्र लिखा जिसमें प्रिय अखिलेश को प्रवेश की स्वीकृति पर प्रसन्नता व्यक्त की गई थी। साथ ही मैंने लिखा कि हमने अखिलेश जी के लिए समस्त सामनादि लेकर सारी तैयारियां कर ली है तथा १३ या २० नवम्बर को एक विशेष आयोजन करके अखिलेश भारतीय को स्वामीजी महाराजजी के साथ ही रोजड़ भेज देंगे। स्वामी जी की अस्वस्थता के कारण उनका समय हमें नहीं मिला। स्वामी जी का पत्र आया कि जब तक मैं स्वस्थ न हो जाऊं, आप बेटे को न भेजें। बाद में अखिलेश जी भयंकर रुप से बीमार हो गए थे।

२४ जून १९९२ को लिखे पत्र में उन्होंने लिखा - आपकी सरलता, निष्कपटता, सेवा भाव तथा अन्य अनेक धार्मिक प्रवृत्तियों के कारण मेरी आप तथा आपके परिवार के प्रति विशेष श्रद्धा रही। मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूँ आशा है आप परमेश्वर को सर्वज्ञ, न्यायकारी मानकर सत्य ही उत्तर देंगे। क्या हिमालय की गोद में नामक पुस्तिका आपने लिखी है ? मुझे यह पुस्तिका कल ही पढ़ने को मिली। असल में वह पुस्तक एक व्यक्ति ने लिखी थी और लेखक के रुप में मेरा नाम छाप दिया था जबकि मैंने वह पुस्तक नहीं लिखी थी... बल्कि तब तक देखी भी नहीं थी। पुस्तक में आचार्यजी के बारे में कुछ अनर्गल चर्चा भी थी। मैंने उत्तर दे दिया कि मैंने कोई ऐसी पुस्तक नहीं लिखी है, बल्कि देखी तक भी नहीं है .. उनका ११-७-९२ का पत्र आया जिसमें लिखा था - आपने सत्य ही का प्रतिपादन किया, ऐसा जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। यदि आप असत्य का अंगीकार करते तो आपकी आत्मा पर जाती, आप

आत्मघाती बन जाते, जीवन भर विश्वास नष्ट हो जाता, बहुत उत्तम किया। ईश्वर आपको परमशान्ति, साहस, बल, धैर्य, ज्ञानविज्ञान व दिव्य आनन्द प्रदान करें, यही मेरी प्रार्थना है, अस्तु ..। इसी पत्र में उन्होंने उस व्यक्ति के गिरते स्तर के संबंध में बहुत कुछ लिखा है, जिससे वह पुस्तक लिखी व छपवाई थी। दिनांक ३०-८-१९९९ के पत्र में स्वामी सत्यपति जी का २१ नवम्बर को ५१ लाख रुपए से सार्वजनिक अभिनन्दन के बारे में लिखा और कुछ कूपन भी भेजे मगर साथ ही यह भी लिखा गया था कि किसी से भी आग्रहपूर्वक धन नहीं मांगना है बल्कि अपनी योजना बतानी है और जितना स्वेच्छा से कोई धन दे उतना ही लेना है ..।

जब वे हमारे यहां से आ गए थे उसके बाद हम लगभग २० वर्ष के बाद उनसे रोजड़ में आकर मिले थे... वह मिलन भी वास्तव में ही अद्‌भुत था.. वहां के ब्रह्मचारियों ने बताया कि वे हमसे कहते थे कि आज मेरे परम मित्र आ रहे हैं तथा स्वयं बार-बार उस कुटिया का निरीक्षण करे थे, जिसमें हमें ठहराना था। उसके बाद हम सपरिवार भी उनसे तथा पूज्यपाद स्वामीजी महाराज से मिलने जाते रहे और अजमेर, दिल्ली, मोगा तथा लुधियाना आदि में कार्यक्रमों में तथा अन्यत्र भी मिलना होता रहता था...। रोजड़ और अजमेर में हुई गोष्ठियों में भी मिलना होता था और घंटों बहुत ही अन्तरंग बातें होती रहती थी। अप्रैल २०१५ में अंतिम बार वे हमारे यहां बहिन जयाबेन आर्या वानप्रस्था तथा अपने कुछ अन्य श्रद्धालुओं के साथ सुन्दरनगर आए थे। समूचा परिवार जैसे प्रसन्नता से झूम सा उठा था और स्वयं आचार्य जी तो बस... इसी वर्ष १९ अक्टूबर को उनका अमेरिका से फोन आया था और वहां की परिस्थितियों से अवगत कराया था तथा कहा था कि अब मैं अकेला विदेश नहीं आऊंगा बल्कि आपके साथ ही आऊंगा... उन्होंने इस बात पर अपनी व्यथा भी व्यक्त की थी कि कुछ विद्वान् और संन्यासी (कुछ के नाम भी उन्होंने बताए) यहां केवल धन एकत्रित करने के उद्देश्य से आते हैं जिससे भारत की विशेषतः आर्यसमाज की छवि धूमिल होती है... उसी दिन उन्होंने यह भी कहा था कि मैं जनवरी में आपके यहां आऊंगा मगर इस शर्त पर कि जनवरी में ही आप भी रोजड़ आएंगे और दूरदर्शन के लिए प्रवचनों की रिकार्डिंग भी करायेंगे... (प्रवचनों की रिकार्डिंग के लिए वे बहुत काल से मेरे पीछे पड़े हुए थे) मैंने उन्हें वचन दिया कि हां हम भी जनवरी में अवश्य ही आऐंगे।

१४ नवम्बर को रात्रि दो बजे फोन की घण्टी बजी तो लगा कि किसी ने गलती से इतनी रात गए फोन लगा दिया मगर जब आचार्य संदीपजी ने अपने भर्राए हुए गले सेबताया कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी अब संसार में नहीं रहे तो जैसे कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। फोन कट गया मगर मेरे लिए यह समाचार बहुत ही वेदना देने वाला था क्योंकि आचार्य जी मेरे परम मित्र थे। अत्यधिक व्यस्तताओं के होते हुए भी सत्यप्रियायति तथा मोगा की बहिन इन्दु पुरीजी के साथ उनके अन्त्येष्टि संस्कार में भी गए... उनके पार्थिव शरीर को स्वयं अपनी आंखों से आग की लपटों में धू-धू कर जलते देखा, श्रद्धाञ्जलि सभा में भरे मन से अपने सीमित उद्‌गार व्यक्त किए मगर मन आज भी विश्वास करने के लिए राजी नहीं है कि हमने एक अत्यधिक स्नेहिल व्यक्ति को खो दिया है... वे एक कर्मठ कार्यकर्त्ता, योगी, चिन्तक और लेखक तो थे ही मगर एक बहुत ही अच्छे इन्सान भी थे। उनमें कार्य करने की अद्‌भुत क्षमता थी। एक बात जब ठान लेते थे तो उस कार्य को पूर्णता देकर ही रहते थे। उनकी सहृदयता और संवेदना एवं व्यवहार कुशलता अनुपम थी... वे अद्‌भुत ऊर्जावान व्यक्तित्व थे। मैंने श्रद्धाञ्जलि सभा में भी कहा था कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी के रुप में हमने आज एक उच्च कोटि के चिन्तक, कर्मठ कार्यकर्ता और सहृदय इन्सान को खो दिया है।

- महादेव, तह. सुन्दरनगर जिला-मण्डी (हि.प्र.)

मौसम ने ली है अंगड़ाई, फिर नयी बहार छायी है,
रंगों के लुभावने पर लगाकर, फिर से होली आयी है..
दुष्ट ख्यालों को जलाकर, अच्छाई की डोली में सजकर
जीवन में नव रंग सजाने, फिर से होली आयी है ..
बीत गये अब रुढ़वाद सब, नयी आजादी , नये विचार
नये युग का इंद्रधनुष ले, फिर से होली आयी है ...

आरोग्य जगत

होमियोपैथी से एलर्जी का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

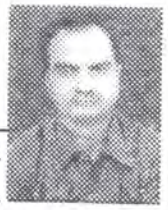

आजकल एलर्जी शब्द बहुत ही प्रचलित हो गया है। जिस किसी को आठ-दस दिन बुखार, नजला, खांसी, आंखों से पानी निकलना उसे एलर्जी का शिकार कहा जाता है। रोगी बड़े ही शान से कहता है डॉक्टर साहब कहते हैं आपको एलर्जी हो गयी है। एलर्जी क्या है ? होमियोपैथी का इस विषय में क्या विचार है ? होमियोपैथी में लक्षणानुसार एलर्जी की दवा दी जाती है, होमियो चिकित्सा आकस्मिक एलर्जी एवं जीर्ण एलर्जी दोनों के लिए प्रभावकारी सिद्ध हुई है।

एलर्जी का क्या रूप है ?

१. ऐसा क्यों होता है कि मिस्टर ए एयरकंडीशंड कमरे में आते ही छींकना शुरु कर देते हैं ?
२. ऐसा क्यों होता है कि मिसेस बी जबभी स्ट्राबेरी फ्लेवर वाला आइसक्रीम खाती है तो अचानक रात में उठकर उन्हें सांस लेनी पड़ती है ?
३. ऐसा क्यो होता है कि मिसेस सी को फलों की खुशबू से सांस लेने में तकलीफ होने लगती है ? अतः ऐसे मरीजों के लिए होमियोपैथ कई प्रकार से चिकित्सा करते हैं।

उदाहरणार्थ :- यदि कोई पदार्थ, किसी स्वस्थ व्यक्ति में एलर्जी किसी भी तरह की पैदा करने में सक्षम हो,तो उसी पदार्थको शक्ति कृत करके औषधि बनाई जाती है एवं उसी प्रकार के लक्षण मिलने पर उपचार किया जाता है।

साधारणतः एलर्जी निम्न प्रकार की होती है -

१. श्वसन तंत्र की एलर्जी :- यह एक प्रकार का मौसमी रोग है जिसमें प्रथमावस्था में सर्दी जुकाम हो जाता है आँख एवं नाक से पानी बहता है, छींके आती रहती है, आँखों में जलन होती है श्वास लेने में अत्यधिक कष्ट होता है, अस्थमा का प्रभाव मध्य रात्रि को अधिक होता है यह वंशानुगत भी हो सकता है। वायु प्रदूषण भी अस्थमेटिक एलर्जी का मुख्य स्त्रोत है। इसमें नाक धीरे-धीरे टपकने लगती है, गला बैठ जाता है।

प्रमुख होमियो औषधियाँ :- एलियम सीपा, आर्सेनिक एल्बा, सल्फ्यूरिक एसिड, डुलकामारा, मर्कसाल आदि है।

खाने के पदार्थो की एलर्जी :- होमियो औषधियाँ खाने के द्वारा उत्पन्न होने वाली एलर्जी में भी बहुत प्रभावकारी सिद्ध हुई है। व्यक्तिकरण से सिद्धान्त पर प्रमुख औषधियाँ दी जाती है। जैसे किसी एक व्यक्ति को मक्खन, गोभी, चर्बीदार चीजें, मांस, केक, प्रोटीन एवं अधिक तेल व घी से बने पदार्थो से तकलीफ होना। दूध पीने से पित्त उछल जाना, अण्डा एवं पके हुए मांस खाने पर एलर्जी चीनी या केन शुगर से एलर्जी आर्टीकेरिया, चमड़ी लाल हो जाती है जिसमें जलन व खुजली होती है। यह शरीर के किसी भी हिस्से पर हो सकती है।

प्रमुख औषधियां :- पल्साटिला, आर्टिका यूरेन्स, फेरममेट, सल्पर, एपिस मेल आदि।

मौसम संबंधी एलर्जी :- कभी कभी अचानक मानसून आ जाता है और व्यक्ति मौसम बदलने के कारण कुछ रोगों के शिकार हो जाते हैं। यह मौसम जन्य एलर्जी है। इस प्रकार की एलर्जी कोई विशेष रोग नहीं है,किसी खाद्य पदार्थ या ऋतु एवं मौसम का अनुकूल न बैठना ही एलर्जी कहा जाता है, और होमियोपैथी में लक्षणानुसार उसका उपचार करना ही एलर्जी का उपचार है।

प्रमुख औषधियाँ :- डुलकामारा, कार्बोवेज, नक्स वेमिका, फेरममेट रसटाक्स आदि।

त्वचा संबंधी एलर्जी :- कई लोग त्वचा के रोगों को मरहम लगाकर दबा देते हैं। इनके दबने से किसी को दमा, किसी को कोई और रोग हो जाते हैं। इस प्रकार त्वचा के रोगी को दवा देने से किसी को एक्जीमा, किसी में आर्टीकेरिया, पित्ती उछलना आदि रोग हो जाते हैं। यह बात निश्चित है कि होमियोपैथिक चिकित्सा द्वारा किसी भी प्रकार की एलर्जी का लक्षणों के आधार पर इलाज किया जा सकता है। यह चिकित्सा पद्धति ऐसी है जिससे रोग से पूर्ण रूपेण से छुटकारा पाया जा सकता है। कई रोगी मेरे उपचार से ठीक हो गये हैं। कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

समाचार प्रवाह

राजिम कुम्भ मेला में विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक भगवत् कथा सम्पन्न

राजिम। दिनांक ३१ जनवरी से १३ फरवरी २०१८ तक चल रहे राजिम कुम्भ मेला के पावन अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं रायपुर संभाग की समस्त आर्यसमाजों के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक ०८ फरवरी से १३ फरवरी २०१८ तक वेद प्रचार, विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक भगवत् कथा अपार हर्षोल्लास के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। आमंत्रित विद्वान् थे आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान व संगीतमय यज्ञ के ब्रह्मा, डॉ. कमलनारायण आर्य (प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता) रायपुर, आचार्य विद्यानिधि शास्त्री, पं. नन्द कुमार आर्य प्रसिद्ध भजनोपदेशक, आचार्य जगबन्धु शास्त्री रायगढ़, श्री चतुर्भुज कुमार आर्य उपमंत्री सभा बसना, पं. मुकेश शास्त्री अथर्वेदाचार्य वेद विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर, आचार्य उद्धव शास्त्री प्रचारक सभा, पं. संजय शास्त्री रायपुर, आचार्य राममुनि जी, नन्द कुमार आर्य योग शिक्षक, श्री लोकनाथ आर्य प्रबंधक दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्द रायपुर, प्रचारक श्री रामनाथ आर्य रायगढ़ सहित रायगढ़, जशपुर से पधारे ८० वानप्रस्थीगण मुख्य रुप से उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में सभा मंत्री दीनानाथ वर्मा सभी दिन उपस्थित रहते हुए वेद प्रचार में विशेष सहयोग रहा। आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा आर्केस्ट्रा ग्रुप के साथ सुमधुर भजनोपदेश दिनांक ८ से १३ फरवरी २०१८ तक प्रचार किया गया और पं. नन्द कुमार आर्य प्रसिद्ध भजनोपदेशक द्वारा ढोलक वादक श्री मानिकपुरी के साथ अत्यन्त हृदयग्राही तलस्पर्शी भजनोपदेश दिया गया। कार्यक्रम में महर्षि दयानन्द आर्य प्राथमिक विद्यालय, तुलाराम आर्य उ.मा. विद्यालय कूंरा, तुलाराम आर्य हाईस्कूल लवन के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ, श्री रामकुमार वर्मा प्रबंधक लवन, श्री महेश तिवारी, श्रद्धानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय संतोषीनगर रायपुर, महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर के प्राचार्य सहित समस्त स्टॉफ एवं पूर्णाहुति के अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रान्त स्थित समस्त आर्यसमाजों के आर्यजनों की उपस्थित रही।

दिनांक १३ फरवरी २०१८ ऋषि बोधोत्सव को प्रातः शाही स्नान के बाद नगर भ्रमण हेतु जुलूस में आर्यसमाज पण्डाल से सभा प्रधान सहित समस्त वानप्रस्थीगण भाग लिये। सभा के उपप्रधान माननीय श्री सोमप्रकाश गिरी जी महाराज एवं श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर का विशेष सहयोग रहा। आर्यसमाज टाटीबन्ध, आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के अनेकानेक पदाधिकारी एवं आर्यसमाज राजेन्द्र नगर कटोरातालाब रायपुर के पदाधिकारी एवं सदस्यगण आर्य समाज के पण्डाल में उपस्थित होकर वेदप्रचार में विशेष सहयोग दिये। सभा कार्यालय से श्री नारायण कौशिक, रामाधार, श्रीमती मोंगरा बाई का विशेष सहयोग रहा। आर्यसमाज के पण्डाल में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया जिसमें अपार भीड़ रही। प्रिंट मीडिया वाले पत्रकारगण एवं फोटोग्राफरों का विशेष आगमन हुआ।

संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर मंत्री दीनानाथ वर्मा

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री "वाल्मीकि पुरस्कार" से सम्मानित

लखनऊ। आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एवं संस्कृत भाषा के कवि एवं रचनाकार डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री को उ.प्र. संस्कृत अकादमी ने दिनांक ७ फरवरी २०१८ को वाल्मीकि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राज्यपाल श्री राम नाईक जी की उपस्थिति में उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार में २,०१०,०००/- दो लाख एक हजार रुपये की धन राशि के साथ शाल एवं प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया गया। अग्निदूत परिवार इस अवसर पर डॉ. शास्त्री के लिए हार्दिक शुभकामना एवं वर्धापान अभिव्यक्त करता है।

ग्राम जर्वे में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

ग्राम जर्वे (बलौदाबाजार)। मूर्धन्य आर्यसमाजी श्री गणेश प्रसाद वर्मा के गृह ग्राम जर्वे व्हाया सण्डी, जिला बलौदाबाजार (छ.ग.) में स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती का २९वाँ पुण्य स्मरण समारोह एवं पूज्यनीया माता सुभौतीवर्मा की तृतीय पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में यजुर्वेद पारायण यज्ञ दिनांक ३ से ६ फरवरी २०१८ अत्यन्त धूमधाम से सम्पन्न हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय वेद वक्ता स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की २९वीं पुण्य तिथि के अवसर पर ग्राम जर्वे में ४० अध्यायों वाले परमात्मा की पवित्र वाणी यजुर्वेद के सम्पूर्ण १९७५ मंत्रों का पारायण स्वाहाकार पूर्वक यज्ञाग्नि में आहुतियां देते हुए सम्पन्न की गई। बसंत ऋतु के अनुकूल ऋतु सुधारक हव्य सामग्री से यज्ञ किया गया, जिसमें आमंत्रित विद्वज्जन - आचार्य अंशुदेव जी (सभा प्रधान), संगीतमय यज्ञ संचालन, डॉ. कमलनारायण वेदाचार्य (वैदिक प्रवक्ता) वेदपाठ एवं मंत्र व्याख्या, आर्य दीनानाथ वर्मा (सभा मंत्री) स्वामी दिव्यानन्द के संस्मरणों की प्रस्तुति, वेदपाठक गण - आचार्य विद्यानिधि शास्त्री, पं. नन्द कुमार आर्य, पं. मुकेश पाठक अथर्ववेदाचार्य, पं. संजय शास्त्री, महात्मा इन्द्रमुनि जी पुटपुरा। कार्यक्रम में श्री गणेश प्रसाद वर्मा के पांच पुत्र-पुत्र वधु एवं चार पुत्री-दामाद सहित सभी पौत्र एवं परिजन उपस्थित रहे। ग्राम के समस्त गणमान्य भद्र आर्यजन बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। पूर्णाहुति के दिन सैकड़ों अबालवृद्ध लोगों की उपस्थिति में संगीतमय पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। तत्पश्चात सभा प्रधान द्वारा श्री गणेश प्रसाद वर्मा सहित परिजनों तथा गणमान्य लोगों का सत्यार्थ प्रकाश के द्वारा सम्मान किया गया। यजमान द्वारा सभी आमंत्रित विद्वानों का एवं आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर से पधारे प्रधान श्री दयाराम वर्मा, मंत्री श्री छबिलसिंह रघुवंशी, प्रबंधक श्री भुवनेश्वर प्रसाद शर्मा सहित अन्यान्य लोगों का शाल श्रीफल से सम्मान किया गया। श्री मल्लूराम साहू जी, डॉ. मोतीलाल आदि अनेकानेक स्वामी दिव्यानन्द जी के शिष्यगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ। - **कार्यक्रम से लौटकर मंत्री दीनानाथ वर्मा**

आर्यसमाज मरौद में विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

मरौद (धमतरी)। आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के संयोजकत्व में महर्षि स्वामी देव दयानन्द जी के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने एवं मानव मन के भ्रांतियों को दूर करने तथा वेदों के संदेश को घर-घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से पूर्व वर्षों की भांति आर्यसमाज मरौद में दिनांक १८ से २० फरवरी २०१८ तक जानकी देवी आर्य विद्यालय मरौद (धमतरी)में, विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। दिनांक १८ फरवरी २०१७ को प्रातः ९ बजे से ११.३० बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ आचार्य कर्मवीर शास्त्री (सम्पादक अग्निदूत) दुर्ग के ब्रह्मत्व में सम्पन्न किया गया, तत्पश्चात यज्ञ, भजन व प्रवचन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सायं ३ से ६ बजे तक भजन व प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आमंत्रित विद्वान् के रुप में पं. नन्द कुमार आर्य प्रसिद्ध भजनोपदेशक बैजनाथपारा रायपुर., पं. सूरज आर्य धर्माचार्य आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, श्रीमती अनीता वर्मा भजनोपदेशिका उपस्थित रहे।

दिनांक १९ फरवरी २०१८ को जानकी देवी आर्य विद्यालय मरौद एवं श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय संतोषीनगर के छात्र-छात्राओं द्वारा दोप. २ बजे से रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सहयोगी संस्थाओं में महिला आर्यसमाज जवाहर नगर, आर्यसमाज टाटीबन्ध रायपुर, आर्यसमाज कटोरातालाब, आर्यसमाज संतोषीनगर रायपुर के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर सभा के उपप्रधान श्री सोमप्रकाश गिरी, श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा सहित सभा के पदाधिकारी एवं अन्य गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे। तीनों दिन ऋषि लंगर श्री सोमप्रकाश गिरी के सौजन्य से उनके गृह ग्राम मरौद में सम्पन्न हुआ।

- संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर सभा मंत्री

एक ऐतिहासिक कदम – ४० विकलांग जोड़ों का विवाह

रायपुर। अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद छ.ग. प्रांत, कान्यकुब्ज सभा व शिक्षा मण्डल, मारवाड़ी युवा मंच रायपुर सेन्ट्रल, सीनियर सिटीजन वेलफेयर फोरम रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक १८ फरवरी २०१८ को विकलांग युवक-युवती सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। यह विवाह संस्कार समारोह आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के ब्रह्मत्व में सोल्लास सम्पन्न हुआ, जिसमें ४० से अधिक आर्य विकलांग जोड़ों का विवाह संस्कार वैदिक रीति से पं. संजय शास्त्री प्राध्यापक संस्कृत एवं पं. मुकेश पाठक अथर्ववेदाचार्य टाटीबन्ध रायपुर के सहयोग से सम्पन्न कराया गया। इस समारोह में श्री दयाराम वर्मा, उपप्रधान सभा एवं प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री, आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, आर्यसमाज टाटीबन्ध रायपुर, महिला आर्यसमाज जवाहर नगर रायपुर के समस्त पदाधिकारी व सदस्यों का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर श्री बृजमोहन अग्रवाल मंत्री छ.ग. शासन, डॉ. डी.पी. अग्रवाल राष्ट्रीय कार्य. अध्यक्ष अ.भा.वि.चे. परिषद, श्रीमती रमशीला साहू महिला बाल विकास एवं समाज कल्याण मंत्री छ.ग. शासन, श्री श्रीचंद सुंदरानी विधायक रायपुर उत्तर विधान सभा, श्री विनय पाठक अध्यक्ष राजभाषा आयोग छ.ग., श्री सदाराम मित्तल समाज सेवी रायपुर, श्री त्रिलोकचंद बरड़िया समाज सेवी रायपुर ने पधारकर नवाविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद प्रदान किया।

गुरुकुल नवप्रभात आश्रम का १६वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नुआँपाली (बरगड़) उड़ीसा। तपोनिष्ठ पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी के आशीर्वाद से संचालित गुरुकुल नवप्रभात आश्रम नुआँपाली बरगड़ उड़ीशा का १६वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ३० व ३१ जनवरी २०१८ को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण तथा १०१ कुण्डीय महायज्ञ स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इसे सफल बनाने के लिए आर्यजगत् के उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वान् व आर्यजन पधारे हुए थे, जिनमें स्वामी परमानन्द जी, स्वामी व्रतानन्द जी, स्वामी सुरेश्वरानन्द जी, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, डॉ. सोमदेव शास्त्री, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, आचार्य विश्वमित्र जी भारद्वाज, डॉ. सोमदेव शन्ताशु, डॉ. यशदेव शास्त्री, आचार्य वाचस्पति जी, आजार्य जयेन्द्र जी, आचार्य उदयन, प्रदीप पुरोहित, विधायक पदमपुर श्री जे.पी. अग्रवाल, श्री जयप्रकाश सिंह, श्री राकेश दुबे जी, श्री दयानन्द शर्मा, श्रीमती सीता दबे जी (अमेरिका), श्री विनोद जायसवाल, डॉ. शिवशंकर शास्त्री, आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री, आचार्य धीरेन्द्र शास्त्री, पुरुन्दर शास्त्री, भरत शास्त्री, विद्यासागर शास्त्री प्रमुख थे। ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारनियों का सस्वर वेदपाठ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, योग, व्यायाम व बलप्रदर्शन देख आर्य जनता मंत्रमुग्ध हो उठी। वेद एवं मानव निर्माण सम्मेलन, भव्य भारत निर्माण सम्मेलन, वैदिक शिक्षा सम्मेलन, जैविक कृषि-गोसंवर्धन सम्मेलन आकर्षण के केन्द्र थे। महर्षि दयानन्द बँरिहापाली, सांई सेवा संस्था श्रद्धापाली व समस्त आश्रम प्रेमी बंधुओं का विशेष सहयोग रहा। सम्पूर्ण कार्यक्रम के मार्गदर्शक डॉ. सोमदेव जी शतान्शु थे। गुरुकुल के अध्यक्ष भगवानदेव जी, कन्या गुरुकुल की आचार्या डॉ. अहल्या नायक व गुरुकुल के आचार्य वृहस्पति जी ने सभी का आभार व्यक्त किया। आगामी वर्ष का संकल्प लेते हुए शांति पाठ के साथ उत्सव सम्पन्न हुआ। - *संवाददाता आ. प्रेमप्रकाश शास्त्री*

ट्विटर :- घर में पैसा रखोगे तो मोदी का खतरा। बैंक में पैसा रखोगे तो नीरव मोदी का खतरा। आईपीएल में पैसा रखोगे तो ललित मोदी का खतरा, स्वच्छ भारत अभियान के तहत देश की सभी बैंकों को साफ कर दिया जायेगा।

नामकरण संस्कार सम्पन्न

कांसा (जांजगीर-चांपा) । दिनांक १७ व १८ फरवरी२०१८ (शनिवार, रविवार) को आर्यसमाज कांसा, तह.-डभरा, जिला जांजगीर चांपा (छ.ग.) में आर्यसमाज के श्री रोहिणी कुमार चन्द्रा के मंझला बेटे रणवीर व पुत्र वधु श्रीमती मन्दाकिनी को प्रथम पुत्र एवं छोटे बेटे आत्मवीर व पुत्रवधु श्रीमती लक्ष्मी को प्रथम पुत्री की प्राप्ति के शुभ अवसर पर नामकरण संस्कार एवं षष्ठी कर्म का कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम आमंत्रित विद्वान महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं माँ सत्यप्रिया यति जी (हि.प्र.), आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, संस्कारकर्ता आचार्य जयदेव शास्त्री बिलासपुर के पावन सान्निध्य में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर आमंत्रित विद्वानों का भजन, प्रवचन, सत्संग कार्यक्रम में सम्पन्न किये गये। कार्यक्रम में रोहिणी कुमार चन्द्रा, श्रीमती सीतादेवी चन्द्रा, शुकदेव प्रसाद वर्मा, हीराबाई वर्मा, देवेन्द्र-सीमा, महावीर-मीना, नरेन्द्र-शकुन्तला, शारदा-पुरुषोत्तम, लीला-चन्द्रकुमार, शीला-भगतराम, रजनी-गंगाधर, श्रीकांत, यश, कृष्णकांत, सुमेधा, अमर्त्य, अशोक, हेमन्त, अश्वमेध, आशीष, दीक्षा व जितेश मुख्य रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में आसपास के गणमान्य आर्यजनों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

-संवाददाता - आचार्य रणवीर आर्य, कांसा

गुरुकुल हरिपुर जुनानी का अष्टम् त्रि-दिवसीय वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

हरिपुर। परमपिता परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से सहृदयी दानदाता महानुभावों के सहयोग व गुरुकुल हितैषी दिव्यात्माओं के परोक्ष-प्रत्यक्ष उपस्थिति में गुरुकुल हरिपुर, जुनानी जि. नुआपाड़ा ओड़िशा का त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव २७, २८, व २९ जनवरी २०१८ को अनेक प्रेरक कार्यक्रमों के साथ गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के सान्निध्य में गुरुकुल के आचार्य, उपाचार्य एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं के पुरुषार्थ से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल के संरक्षक लेखवीर श्री खुशहालचंद्र आर्य जी कोलकाता एवं श्री बसंत कुमार पण्डा राज्य भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के शुभकरकमलों से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महोत्सव में पधारे ओड़िशा, छ.ग. झारखण्ड, म.प्र. आ.प्र., दिल्ली, कोलकाता आदि प्रदेशों के सहस्राधिक श्रद्धालु महानुभावों को आशीर्वचन एवं मार्गदर्शन हेतु स्वामी शान्तानन्द सरस्वती गुजरात, स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक अजमेर, स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द सरस्वती ओड़िशा, आचार्य आनन्द कुमार पुरुषार्थी होशंगाबाद, पं. नन्दकिशोर आर्य भजनोपदेशक रायपुर उपस्थित थे। *संवाददाता : दिलीप कुमार जिज्ञासु*

होनहार तेजस्वी "समीक्षा आर्या" को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

नन्दिनी (भिलाई) । डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी भिलाई में कक्षा ११वीं में अध्ययनरत कु. समीक्षा आर्या का दिनांक १९ फरवरी २०१८ को रात्रि में देहावसान हो गया। वे लगभग १६ वर्ष की थी। कु. समीक्षा अग्निदूत पत्रिका के सम्पादक आचार्य कर्मवीर शास्त्री की लाडली सुपुत्री थी। उनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से दिनांक २० फरवरी २०१८ को उनके गृहग्राम कण्ठीपाली में सभा प्रधान हजारों आर्यजनों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कु. समीक्षा शिक्षा व खेलकूद के क्षेत्र में बहुत ही तेजस्वी थी। उनके इस प्रकार से संसार से चले जाने से शास्त्री परिवार पर मानों दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा है। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्यों व अग्निदूत परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित है।

- निज संवाददाता

आर्यसमाज बिलासपुर का वेदामृत महोत्सव सम्पन्न

बिलासपुर। आर्यसमाज बिलासपुर छ.ग. का ९०वाँ वार्षिकोत्सव वेदामृत महोत्सव के रुप में ४ से ७ जनवरी १८ के मध्य पं. देवकीनन्दराम भवन लाल बहादुर शास्त्री विद्यालय प्रांगण बिलासपुर में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत ४ जनवरी १८ को प्रातः ८ बजे वैदिक महायज्ञ के साथ हुई। आर्यसमाज के पुरोहित पं. जयदेव शास्त्री के पौरोहित्य में वेदामृत महोत्सव के निर्विघ्न सम्पन्न होने की मंगलकामना के साथ वेद मंत्रों की आहुतियों के साथ हवन की गई। तत्पश्चात आर्यसमाज गोंड़पारा बिलासपुर से भव्य शोभायात्रा निकाली गई जो नगर के मुख्य मार्गों का भ्रमण करते हुए पुनः आर्यसमाज पहुंची। वेदामृत महोत्सव के मुख्य वक्ता रोजड़ गुजरात से पधारे वेद दर्शन एवं उपनिषद के प्रकाण्ड विद्यावान स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक का दि. ४ से ७ जनवरी १८ तक प्रातः ७ से ८ यज्ञ के पश्चात ८ से १० एवं सायंकाल ७ से ९ बजे तक आयोजित विविध सत्संग सभाओं में स्वामी जी ने सुखमय जीवन के सरल सूत्रों से परिचय कराते हुए आदर्श दिनचर्या विधि से अवगत कराया। स्वामी जी ने ईश्वर, जीव, अष्टांग योग एवं वैदिक मान्यताओं पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए श्रोताओं के मन में उठने वाले सवालों, जिज्ञासों एवं विविध शंकाओं का वेदानूकुल समाधान किया।

कार्यक्रम में आर्यसमाज के पदाधिकारियों, सदस्यों, दयानन्द विद्यालय के छात्र-छात्राओं, अध्यापिकाओं एवं अभिभावकों सहित बड़ी संख्या में नगरवासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर महोत्सव को सफल बनाया। अंत में समाज के प्रधान ज्योर्तिमय आर्य ने महोत्सव के निर्विघ्न सम्पन्न होने पर परमात्मा का धन्यवाद करते हुए पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सहित कार्यक्रम में भाग लेने एवं सहयोग प्रदान करने वाले सभी जनों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आर्यसमाज में आयोजित ऋषि लंगर में सम्मिलित होने का अनुरोध किया। श्री पुष्कर जायसवाल ने स्वरचित कविता द्वारा चार दिवसीय महोत्सव का काव्यमय सारांश प्रस्तुत करते हुए सभी का धन्यवाद किया। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के वैदिक उद्घोष के साथ हर्षोल्लासमय वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल, मंत्री आर्यसमाज गोंड़पारा, बिलासपुर

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

राजिम कुम्भ मेला में सम्पन्न विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक भगवत् कथा की चित्रमय झलकियाँ

तुलाराम आर्य कन्या गुरुकुल आश्रम गोहड़ीडिपा के कन्याओं को आर्यसमाज के प्रचारक श्री राममुनि द्वारा आदर्श जीवन जीने के लिए अनुशासन एवं दैनिक दिनचर्या का महत्व बताते हुए

CHH-HIN/2006/17407 मार्च 2018 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग / 99/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001